मृद्धः— भी जालमसिंह के प्रयन्थ गुरुषुत्र विटिंग प्रेस, प्रथमायुचि १००० प्रत्यकृत — श्री स्वाप्त्यन्त्र मेरीहात सदिया इंत पारमार्थित सम्बा, बीकानेर्



'तानांकमायना मोसः' नग्नक त्यान चीर किया मे नीस की प्राप्ति होनी है, मुख आषार के भिष् आता कीर किया घीनों की

इस बक्षार क्षेत्रातमी में जापार्गन सूत्र ता त्रयत स्थात है। इसका पटन-पाटन जास्महत्त्याण एवं मीश्वापि का कारण है।

दर्गानत मुमुत्र मुक्तो को इस गुत्र से बरुक मान्त्र का लाघ खबश्य सेना पाहिए।

De menan fi nan an ren ft

जैन मिद्धान्नशामी, न्यायमीय, स्याक्त्यात्रीय, पेवर पर्ने वाहिया 'बीरपुत्र' Fr175:-

प्रामं हो मुत्राकार है। वहने धनारकान में ती बारवयन हैं जीर तूनरे अंतरकार में भीतह वारवयन हैं। होनी धुरुष्टानों में कुल

यगेता किया की प्रधानता होने से किया रत बालार को बनलाने बाला यह सूत्र भी प्रधान है, इसीलिए यह पहला श्राप्त है।

न्नायरवस्ता होती है। इमित्रव न्नाचार का बिलावक यह चन्न वनावा तवाहै। न्यावा किसी म्यवेद्धा विशेष में बात की

मानार के संजेश से भोव मेर हैं—? ग्राजायार, 3 स्तानायार, व मानित्राचार, ४ तर ब्याचार, ४ सीसोयार। सम्बद्ध तक्त्व स्ति में ग्रुप्त स्तान्तिक स्वान से प्रथापका करा मानायार है। स्ति क्योन, ग्रम्बन्ध भी मेर्नोजिन निकालित ज्योन् वस में ग्रुप्त मानाम बत्ता स्तानपार है। ग्रमञ्जीक भी बतायोक महेतायण योगी वा रवान कर्नाम निकालिक क्योन के लोग क सेना बत्ता पातितार है। बाजनन्तु और स्ताद मचार कृत्य करात का ज्याचार है। बन्धी तीच का मोन्स न कर्ने हुए हाज तक्ती- पार विल्डोतगुर्धि, पोच निर्मात, बारह भावता, बारह भिन्युत्रोत्रमा, जोच इन्दिनों का दमन, वर्ष्योस प्रकार थी परिश्रहमा, बीज गुनियों, इन्य क्षेत्र काल भाव के तेर में पार प्रकार का व्यत्मितह। परण गणार-वान महामत, वृत्त महार का बन्य वर्म, ततरह प्रचार का त्यम, वृत्त महार का वैपाष्ट्रां, मध्यवेष की मव पात, हात कावार-कान, दशंन, जारित कर मोलमार्ग ही काराधना के लिए किया अने वाला विविध काचार। रराँन, पारिज, वारद प्रकार का तथ स्वीर पार कवायों का निषद (रमत) । इति-दिविष क्षीममहो को पारम करके संघम को पुष्टि खरत। (बनव--मान कीर हानी की तथा वर्षों की क्षितव-अक्ति। तिनेव--शिष्मों का स्वरूप भीर उनका थाथार । पर्मकार्थी में बधारानि बहुति करमा बीयांचार है। الماما - النها موس مديا ما زمال वाता-मंबत हत्य वात्रा का पासना

'कार्राक्रमाच्या मोसः' मन्यक क्षात चीर किया में योच की प्राप्ति हीती है, गुब काष्ट्रांर के भिष् क्षात्र कीर किया दीतों की

त्रावरवास्ता होती है। इमस्ति ज्ञाचार का जिलाएक यह बस्न पहले जताया गया है। ज्यापम किसी अपेदा थियोव से ज्ञान की

टुम बबार बेनातमे में जानारोंन मूत्र ना वयम स्थान है। इसका पटन-पाटन व्यात्महत्त्याण एवं मीर्जन्नि का कारण है।

द्यानित मृत्ये कुनमें मो इस मुत्र के पटन माज्य का साथ जामात्र मेंना पाहित ।

जेन मिसान्नमाम्मी, न्यायनीयं, ठ्यामरणातीयं, पेबरनन्त्रं महिता 'बीरपुत्र' 144.45:-

प्रगमं को मुक्तकाम है। यह ने स्मानकन में नी सम्मान है जीर मूनरे श्रुतमंत्रन में मीतक सम्यम है। बीजी श्रुतमकारी में कुल

यगेता किया की प्रवासता होने से किया हव बाखार को वनमाने वाता यह मूत्र भी मधान है. इसीजिए यह पहला अम्न है। ्र मारत्यम है। पनमं यश महेश है।



वात सारमीय प्रावधी २००८ थी हूमधीच-न्नती महाराज के पछ व्हारर वरम प्रताबी व्याचार्यववर पूत्रथी १००८ श्री जावाहर-आमारप्रदर्शन

मालां। महारात के सृक्षित्य झाख्या पंठ मृति थी पत्रामालत्री महारात ने डून जाचारायि सूत्र की हस्तिलितित कापी कर परिष्या

न्नासीसिटा मृति थी हुलक्तन्ती सहायात्र ने इसकी काथात्रपूर्वक मिरीयाण किया। त्रपीक मृतियमें ने क्वतीकित और ववण करने जीवात वरामार्थ दिये। नवन्तुसार यन स्वली का संबोध्या कर मिया गमा है। जनशेष्ण पूर्व मुनिवरी ने जो परिष्रि जेठाया

भे खाता व्यक्षण तथा म प्राथमां (क्या है इस कुमा के जिल्ल इस च्यांके मया व्याभाती गर्देती।

भरोदान जेठमल रोठिया

क्ष मुरामाजनी महारात द्वारा इस कारी का ज्यानीयात्त उपनेत पूर्व अयम किया। तत्त्वभात सुनुत्तीया (वंताय) से ब्तुपेरितस्थित क्रम सुत्र को अत्रतीतित्र कापी जुधियाता केली गर्छ। यस समय व्यापकी संत्र काफि कमजैरि की । क्रमनित्र, ज्यापने कम्पर्देमानयोज्यपति पुरेक चाक्षोवास्त्र चयकोक्त्रा किया है। तस्प्रधाय क्षेत्रसमंद्रियाका क्षेत्रायाका पूत्रपत्रों १००८ थी। व्यारमायामत्री महाराज की भेषा में

अंनध्मीटबाका अनागमाबाका पूज्यकी आत्मारामजी महाराज ध्यात्रयानवाष्ट्रमति थीमदनतालजी महाराज की ź

भै। भीष्त पारदत प्रकामनृत्री को हता का लिखा हुका भीमशायातात सूत्र का प्रथम अनुतस्त्रण ब्रान्द्रशाये श्रीर संवित मस्मति

भाषाय दीण भीमद्र १०१ राजवाषात त नवस्वक मृष्य रक्ष मृत्त भीमदनलालत्री महाराज के द्वारा खरारतः अवन्त किया। मेरे विचार म तब क्रीकर भागु भीर मार्ग्वको तथा जैत्रधम म प्रवेश करने बाले जिलातु अनी के लिए यह सरक्ष ष्यमुक्ताय प्रत्युपयोगी है। इसका

किंग्युक्क फायवन मुश्मुल हारा हरन वर हरन वरक्त सरकृत व दिन्दी चादि चतुवानों में तीम ही मतति हो मक्ती है। परिहतभी

ा थर परिमम स कार्य किया है। यह अमृत्रा प्राथीन वृष्ति में स व्यतसकृत मही है।

वही भागति मुन्ति भीमहत्रमान्त्रमी राहाराज को भी है

सुधियाता (पंताब) 48-4-Ry 010

746

प्यात्नात नंत्र

ि० गुत्रामक्ष षत्त्रकाम् जैन

मागपुत्रीय महावीरमंगीय जीन मूनि श्री फूलचन्द्रजी महाराज जीन धर्मोष्ट्रेप्टा की

विनाम प्रवासकारी बोटिया जैन न्याय, स्याकाम नीय, मिलान सामीने प्रवास बाह भी ब्याचारांत सुत्र का हिन्ती भाषा में

सराहनीय है। सुच म द्रवम करने वालों के किए नह चनुपार वहा उतनोगी है। झाचारीम सूब का इस बद्ध का हिन्दी भाषा में यह मन्दर मनवाद पिता है मुखबार सन्तवाय घर नावायं की त्रिवेली मंतुनक की उपयोगिता में बार बाँद समा क्षिये हैं। पदाति

गत प्रमा कत्रवात हुत्या है। यह मात्र मार्चा, आवक, पाविका रूच चतुर्विष संघ के लिए पश्रत्रवृश्क का काम बहेगा। यह खसुराष निक्षा विषय में किस नहीं है अन भाग अनी भावि उपक किये तथ है। पुस्त हाथ में आति ही अति दिस स्वाध्याम करते की प्रथम गकार: जागन क्षेमी । कि यहूना जनवा" मर्वाक्न सम्युमं है । इसी वकार हुमरे धुमध्कम का भी खनुवाय हो जाय ती सीने में सुक्षाने

वाली निव चारताथ हो वय सम्पन्नां हो सहाब लाज पहुँच

र्गायमार क्षेत्र Tenta (unia

मममित

शानपुत्र महावीर जैन संघीय

'गुष्फ मिक्जू'

器 त्रवदार कारिशक शख है और अगुम थीन मानमझ है। इस अन्यवत में माद शुम्त्रों की वरित्तों खेवीन अन्दारी है। विका हो तह की होती है-(१) अविका चर्चात क्युम योग आहि कर्मक्य के कार्यो का आनता (५) प्रायाह्यानव रह्मा प्रवांत्र क्रममन्य के कारणीं की जात कर उनका त्याम करता। पहले परता सम्पर्यत - शर्रपरिता। अभी शीहता हे कारण को राख कहते हैं। इसके हो भंद हैं -इन्यराख श्रीर भाषिर्धि र प्रेगा—एष्य बाव ही दिला में निवर्तने हा दय्रेता र प्रजीदाय के दुःखीं का सनुभव बनाने के लिए काययन में सात उर्रो हैं। यह बान्ययन में बाये हुए नवीन विषय के प्रारम्भ को उद्शक कहने हैं। ' उद्गा-- 'यह बा:मा किन रिशा म बावा है' हरगाहि विवार । क्रांवय के हेतुखों का विचार। आनारा मुत्र के पथम अंतरकन्प की विषयानुक्रमणिका र उद्या-काकाय थी हिंता में निरंतने था उपरेता। ४ उद्यो-क्रीवराव थी हिंता में निवतने था कारेता। • अन्य से बन्धे बीर बहरे हो हत्तान्ते। नियय WAGGE EL STE

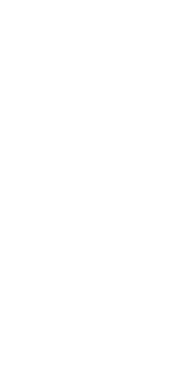
६ नहना-मृति को मुहाम के साथ मानव स करता चाहिए। एक माश्रव के रोपन हो समस्त आश्रवी की न्यं , पद्रम — माना विमा चावि नाम बन्नोमी का स्थाप कुरके मूचि को ष्ट्रमार में काथ स्विम का पालन के 8 नद्या नक्ष्य मोत्र चापि किमी प्रकार का मान स काना चालित। भोती से बाराकता हीना चालित। भिन्न अ संक्रगा-नदाप्तिमत्ताव की दिशा में शिवसंते का उपसेश । स्तुष्य के सतीर के साथ नतापति की माधस्योता थे । १. पदमा- त्रताकाम के जीमों की विषय में जिसकी का क्येंदेश। जम भीमी की विभा के मिनिय कारण। अव अ गहता - महामंत पर में विवृति चातारापि लेकर समा विवीत करता चातिक । मुद्री-मामध्य की गंगम चीर यक फागा के बारटम में मंत्री कामी कामी का बारटम क्षेता है। मनगाम की बाह्रा के क्सारा अस्त्यमञ्ज कोकि विभाग । धारार कीर नराक्ते कारजी वर विभाग प्राप्त करना । इत भाष्यमत में एक गरेशे हिं---्र नदद्याः सार्वात का म्यान करमा चाहिए। मोभी के मुन्त भीर मिर्मानी (नीमरामी) के मृत्य । समानमा बनमा पर प्रमायमि सं भीव भिन्न प्रसं की तुष्ति। अ पद्मशा-न्योगी से संती की पत्निम । योगी के स्वस्त का प्रत्येश । नंद्रमा—पापकाय पः जीवा की दिवा से जिवसंत्री का त्रयमेश । नारायक को योख की प्राप्ति छोती है।

```
. .
                                                                             ैं वहता कानत मनीया दक्षा कीत है " प्रशासी इस्य से भागते हुए भी माव से सीते हुए हैं सीर १४
                                                                                                                                                                               ं ग्रेशा-अव को मुल दिव है। याव क मृत्य पत न वायों की रशानते का अपरेश। सीकार्यों को बाद्य (६०
                                                                                                                                                                                                                                                      े नहीं। भुत्त का अध्यान होना चाहर तमझ आहे के कारण पात्र का प्रसिद्ध क्या परिषद्ध सहने 100
में में में में मूर्त नहीं बनने हैं, उनके लिए हरूप में नंदम होंगे पाहिए। याला का सच्चा
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 =
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      # 2
... सरा कारपणन हतिताच्यीय । भरी तको पर होक दुन्त की अरबाह न इरके तथ जाह समयात रेपना । इस याययन
                                                                                                               कारी बाब हरव से सात हुए बा बाब स सहा खारावे हैं। बीर-मुनि परांष्ट्र जनमार्गे को सम-
                                                                                                                                                                                                              को भारतत्ता हात्रा घकार के संध्येते को ताव कर विषयासिक का स्वास कहता साहित्।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     ै पर्ता - बासन और विश्वत का बालन का हिन्दु क सरक्ता
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              र रहेता को अमात माथा लीम-इन हवादी की होक्ने का उपरेशा
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                ै वर्ता-वराची हे ब्यावे स्वस्य हा हुएत। समस्ति हा वर्षत ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    भीता काम्पन सोदमार । सम्बन्धन में पार महेते हैं-
                                                                                                                                                    alle de fea eem f.
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       ا المراسع وا ويوم
```

2:

* stel-den a fige rent !

, क्षणा जागण होइबा त्यांकिए। इसके जिल्ल कांसूच का ष्रशामा । प्रमांनी वृत्तं निर्धयानीयो से थायिक देवरे ् क्या—सावात की चाधा की बाधावत करते से कृताये का त्यांस जीर रामक्षेप का द्या होता है। रेजर क बहेक्या--मीन को रहता व्याचार्थ की शाद्या में क्षिणहत्ता व्याक्षिय न्याक्षे किया नाक्षायांग का प्रवास्था १९९० र त्यमा – मादवक्त (याच् न्यं। विवासी वी चीवव्ता के गक्षित) व्यशीतार्थं एवा सूत्राये के मिल्रा युवित मात्रु थित કે જેલા— મગા-લાભાગ વારત માર્મોલી લીમાલી કાંત્રવા કાં પ્રવાસ મુચિ બિકાલિ હાતાર તકા વૃતિ લાલ્સ વિશ્લે को बानेसे स्थित को क्षिण । व्यक्तिमार्थ के स्थान सितार के क्षेप । मुत्र स्थान के पासिन की ત્વકો માળા. વિવયમોની મેળવે વ્યાકળ કે વસૂબિ કરમે પાલા પ્રમા વિવૃત્તમોનો કે વ્યાનિત , गरेमा-मोह हो बार मूर्ग धवमत्त्राति का प्रणान । पानी के शामि का त्रानेश । माभिता की कि े गहेशा-नागरी म मिलुण होता मामता श्री गुरित फला ताम सम्भा है। वृश्वित के त्याता का प्रयोश क हत्य दाध्यान पुताष्ट्र (भागक्रमी का ताबना १/ इस कारवना सं योग पहुँसी मिन्न une man artic fe finit et gifgen reit fi i प्रतियो यथ्यमन त्रीक्षणात । इस बरणमन व दब नहें हैं।







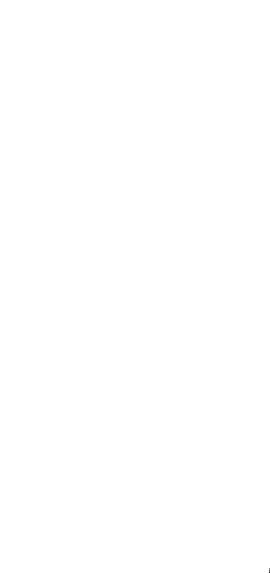
जनगणिः —ाम मेरा वामा वामा वामा वामा वामा मानगो में उपन होने वामा (मांग) है, बापवा (में) मेरा

कार प्राथम स्वयः भित्र भित्र मित्रमी में उत्तत्र होने याना (मित्र) नहीं है निषम (बहे) में (हे) कीन (मामी) था और (ह्यो)

मावार्थ अवस्त मानासरातीय क उक्षम सं किम हो बान-जांक हैंक सहै है यह जीव यह नहीं जानता कि में पूर्वभव में कीन काम १९९९ अस्तर का एन दिसी एक असम्बर्ग दिया में न्या में न्या व्यवदा (ब्याहिनावी) प्रमुद्धिस से (बहे) में (बामबो बीमे) जाया है म यह प्रत्य महामाना म्यानी मन्नति-मृत्म युद्धि पर्व जातिस्मरण ग्राम द्वारा तथा (पातामरणेणे) नीय इन नादि से नगरम स ा चनवा अव्यान, कृतमों के (बारण) पाल से (मोहबा) सुनक्षर (क्या) फिर (वे) पूर्वोक्त बातों को राज र जान नेता है 🕬 ने में कि 🗵 माल आयोग पुर्व (ज्यायो) दिया से (बापबो बीम) भाषा है (या) प्रथया (बाप) यायद कृत्यमात्रो स दिनात्रो ज्ञानत्रो बहर्नान जाव क्रम्भानीत्रो दिमात्रो ज्ञणुदिसात्रो वा वागत्रो बहर्मीस, ल्सांगीत ने मार्ग तरह -- प्रत्यिय म प्रामा उत्तराहण, जो हमात्रो दिमात्रों वा ष्रमुदितात्रों वा ष्रमुत्तंत्रद्ध, सीत ।।।।। हत मर्गर में नक्षा हुट कर हर। इस मंत्रार में लेला दुनने जन्म में (के) क्या (अभिमाधि) क्रोर्डिया है ॥३॥ में ते पुण त्रालंडत यह मस्पट्टपाए प्रयापरणमें प्राध्मेपि वा प्रतिए मेड्ना तेजहाः — मा योग जात राम राज्या

ं कियन से जीनों का अल्ला बान जान (भवर) हो जाता है (में) कि (में) मेरा (आपा) ब्राह्मा (अत्याहा) औष-







द्रमस्य नंत्र नीनियस्य पन्निंदमामामामुयमाष्ट्र बाडपरमामीयमाष्ट्र दुस्यपडिपायहेर्डे ॥१९॥

्यार इस मांगिरमा जीवन के लिए अर्थान इस जीवत को नीरोग और निरंजीयी पनाने के जिए (नैप) स प्रत्य के फिल जीर राज्य राज्य करने के निर्माण करने के निर्माण मुख्य नामा प्रकार की सामय फिलार्स ान सामासामा का प्रमान का का मान के जिल नामा पूजा मिल जो पुत्रा मिल का पुत्रा मिल (जासारणानी मुणाए) जनमन्मरण

प्रथम थ्य

अस्यां – स्तांक स्टातको पुर्ता किया सावन किया क्यान हो। तो पुरुष धानी हिने हन क्रियाखी की कर्मकरा . जाव में अनि इनमी ही (फामपानंगा) नित्यार्थ (परिजामियय्या) जानने योग्य ं हा कि याने हैं। उनमें चिधक मा कम नहीं। इसिन्ति विवेकी पुत्रपी की इसाधा स्पत्नप ममान्ति मन्त्रातान नामांम क्रमममाने वा पनि जामिनव्दा भवति ॥११॥ 1111

रामा जाशीम अमाममानेना पांगमाना भारीन ने हु मुली पनिस्णामक्रमी ॥१३॥ चि श्रीमि ॥



यहें लेंग प्रिगुणने रुम्मंबेंहें व्यविज्ञानम् व्यस्ति लोम् पन्तहित् तत्य तत्य पुडो पास व्याउरा परितार्वेति ॥१४॥ 😥 प्रथम अध्ययन का धूनरा उद्दार 🥨

द्वितीय

महिल क्षणे माल समाम का पृत्तीकाय का श्राम्यम स्ययं नहीं करते हैं, दुसरी से भी नहीं करवाते हैं सथा आरम्भ करने याती का कामण्य को नरी कान है को मानुकी को है जिल्या ! वृक्षी पुषक (वान) मेखी अर्थान् पुष्वीकावादि का बारडम करते क्रकेस प्राणी (प्रा) क्रमम क्रमम (मिया) पृथ्यी में रहे हुए (गीते) धै, क्रमा उनके क्रारम्भ से (क्रमाणा) ब्रन्यायः---ाताः। यह प्रामित्रतं (यहं) व्यार्थ-मुझ्ती हे (वरिक्णो) उत्तम विवेक रक्षित हे (हमसे) नुःख से योथ कराने भागले -यतानी विषयासक त्रीय श्रुपंते स्वार्थ के लिए ताचा प्रकार से युष्यीकाय का आरक्त समारक्य करते हैं किन्तु मंति पामा पूरो मिया, लञ्जमामा पुरो पान ध्रमामासा मो भि एमे प्ययमाया जिसमे विरुवस्त्रीहि सत्येहि मोग्न हे । क्रासमा कदामी है । क्राम क्षा होक के अथीत् पुरुद्यीकाय के (पत्रीक्ष) मीदिन होने पर भी (बाडरा) से बाहुर त्रीय क्ष्य क्ष्य क्षित्र सित्र कार्यों के त्रांग (पूरो) अलग भ्रतम इसे (गीमज़ींश) परिताय देते ही 18था। गुर्शनक्रमममारंगमा पुरिमम्थं ममारंगमामे खण्मेवि खमोगरूपे पाणे विहिमह ॥१थ॥ विवयो वृत्रम वेम्बर न्या विकास है ॥



स्च मान्य का (प्रणाप्तानी) बाहरम करणामा है (या) चीर (प्रतिमामी ब्रथ्सी रूच मान्य का (प्रवासिनी) चाहरम करते कुप (म्राणी) यूपरे प्ता यंगास्य यापा यंगमन्त्र, यापंत पायतस्य खापंत पायमन्त्र, याणंत गुण्हमन्त्रे यापंते गुण्हमन्त्रे, व्यापंति तं ग यहिताल, तं म यश्रीहल, में तं मंतुरुक्तमाले जायाणीयं ममुद्वाय तीरूया खुख मगवज्ञो ज्ञणमाराणं या ातमा १३४ वर १६ मध्यहि वृद्धियमममामंत्रम पृत्रविमन्त्रं ममानैयमामे श्रामेम श्रामेमान्त्रे पाणे निर्धितद, हे वैपि-एक त यापा नंपवच्छ, यापा ताण्मक्षं यापंत त्राणुमच्छे, यापंत ऊकाको यापेते उक्ताच्छे, यापेते कडिमच्ने मामा क्रिमान्छ, यापमा मानिमान्न यापम मानिमन्छ, यापेमे उद्गमन्भे यापेमे उद्गमन्छे, यापेमे पातमन्भे यापेमे मंतिन हर गरीस मार्थ वन्छ, तम बन्तु मंथ, एम बन्तु मंखे, एम बन्तु सारे, एम बन्तु मारम, इनस्थे मितिन, जीप, नमधन्त्र, याथम मिडिम व याथम पिड्रमन्त्र, यामीन उत्तमको व्रापेनी उत्तमन्त्रे, व्यापेनी हिषयमक्ती व्यापेनी हिषयमन्त्रे, ामां – यमानी (मि निक्त कारणों में क्रमीकाय का खास्म करते हैं ने कारण कार के मूत्र में मतारों गये ॥ अयो का त्याणत्राहर अनुवाद्य करता है ॥१६॥

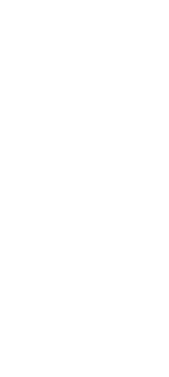
मन्यतः यमाम्य चन्यतः यम्याः १, यन्याः संग्रमम्भे खायांन्ते, खायांने वाहुमन्ते खायीगे बाहुमन्त्रे, खायीगे

हत्यम १ १८५४ १ १४ १ अप्पा यंत्रीलमन्त्रं अप्पेम अंत्रीलमन्त्रं, अप्पेमे महमन्त्रे अप्पेमे शहसन्त्रं, अप्पेमे



मः निकाम ही ःप मह पुरुषीयतम् का मारुम त्योग क्रमंत्रयं का कारण है, (पत्र) निकाम ही (एत) मह पुरुषीकाम का बारुम . / गोह का काम है। तम निश्रम ही लग यह यूक्तीकान का बारक्स (गारी सुम्यु का कारम है। (मनु) निश्रम ही (ग्ल) यह तूरके व व व व वारम माम नहस्र का वारम है किर भी (मोक) दिवय मीमी में भाखका (बीए) जीय (इन्सरं--इक्नेसाइ) मपने गरत प्तन चीर सामात नाहि के जिल नक्करोंके नाना प्रकार के राज्येते माना (प्राधिकमामासरी) पुरुषीकांत्र के नामा में मा इस प्रमास्त प्रशीयात क्षी शत्य का (सामंत्रताते) आहराम करता हुया जीय (याले) कुन के (यालेल्जे) अभेक ार के हे 🔻 🕕 जनमान्य पुरुष की यायत् मधिर-यादि, मूक-मूंसे, कीथ्री थीर लूजे ा का के ता ता प्रपास अन्य पुरुष की छेदम करे, (यमेरी) कीई (पायान्त) उसके वाके तार माने मानी तामन कर ता मोड़े तिमालना उसकी महाका मिक्स करे (मनी) कोई (तिमान्ते) उसकी क्षा का सम्मन कर कार्क कार महत्त्र का भेदम करे (व्यक्षेत्र) कोई (जाणुम्ब्ये) उत्तरि धुटनी का छेदन करे ा करें . . मारा मा मा भारत का लाम कोई क्या है। उसके उसके उस का छुर्म करें (यामे) की हैं (बिटाक्से) उसकि ा सुर नहार हा हा हार हा गार का सुक्षा में मुख्योंने कि मुख्यीकाम के जीम देखने नहीं, खुनने नहीं, मोजने नहीं, गाम का की मानमा की ती की है मा कि महिला है से वेदमा का अनुभव किसे करते हैं ? तो में यक इत्यान जाय गारी का अक्षत कर (१७११) कार्क असे परों का शुरम करें (बलों) कोई (प्रकारणे) उसके मुलनों का मेदन करें (बणोंगे) ante it in afferat follow, fragt urat fe जगम् प्रत्य को १० । धरम फर्ने तथी इस कान को त्या त्या का हो कि

क्रिनीय .



्री | र्कट्यागक्रमन्का संदत्तकां व्यवता कोई (बांब्यक्षे) उसके कदियान-क्रमर्का हेदन करे (व्यवेते) कोई (व्यक्तिये) उसकी कामा कोई (उटापार) उसके पट का छिदन करे (अयंगे) कोई (पाम्मान्ते) उसके पार्श्वभाग-एसघाँकु का भेदन करे (कर्णेगे) कोई उसकी पीड का छेदन करे। जमंग कोई (अमन्मे) उसकी छाती का भेदन करे (मनेगे) कोई (अफ्ने) उसकी छाती का छेदन करे नामि का मेटन कर जमान कोई मानिमच्छे। उसकी नामि का ध्रेदन करे (बांग) कोई (उदलप्त) उसके पेट का मेदन करे ।सम्मन् ३। उत्तरे राश्वंमात-प्रसवां इत्य को (क्यारी) कोई (बिट्यानी) उत्तदी पीठ का मेदन करे (क्योरी) कोई (बिटिमची)

(बयगं) कोई (१६०यान्त) उसके हृत्य का मेन्न करे (बयगें) कोई (बियमन्त्रे) उसके हृत्य का होक्न करे (बयगें) कोई (बयमन्ते) उसके स्तमों का मेदन करे (व्यक्ते) कोई (पणमच्डे) उसके स्तमों का धेदन करे (व्यक्ते) कोई (व्यक्ते) उसके काथे का भेदन करे (यम्मे) कोई (मनमन्त्रे) उसरे काचे का छेदन करे (क्रमें) कोई (महमन्त्रे) उसकी षाहु-भुन्ना का मेदन करे (व्यमें) कोई (बाहुमन्त्रे)

उसकी बाहु-भुक्ता का छेन्त करे (कांग) कीई (हत्यमत्ते) उसके हाथ का मेदन करे (कांगे) कीई (हत्यमत्ते) असके हाथ का

धेदन करे (करें) कोई (वज्ञानक्य) अनकी अंत्रुति का मेदन करे (करेंगे) कोई (बंग्रीनक्ष्ये) उनकी धंत्रुति का धेदन करे भिष्णे कोई (महमन्त्र) उसके मह्यों का भेदन करे (मणेते) कोई (महमन्द्रे) उसके सह्यों का होदन करे (मणेते) कोई (बातने) कर (अपना) कों (हणुल्डे) उनदी दाड़ी का धेरून करे (समीन) कोई (हाझरने) उसके ओड़ों का मेरन करे (बलेगे) नीई (हाझरने) उसमें बोहों का हेर्यन करे (अपनेते) कोई (रंभक्त) उसमे व्हिनों कर मंदब भरें (पणेते) कोई (रंभाप्ते) उसके वृत्ति का होदन करे

मिकी गर्न का मेदन करे (क्योंग) को है (मीलमन्ते) उसकी गर्दन बा छेड्न करे (क्योंगे) कोई (ब्युमन्ते) उसकी काड़ी का मेदन

। सन्तरा स्थता, वास्तरा चीर नस्तरा महो है, तथावि यह वेदना का अनुस्य ती करता हो है। जैसे पूर्व कर्म के ज्यूप से कोई कानाथ - गण्या १ १ वर्ग हम्मीनम ज्याका आवस्त क्रमना पापका कारमा है। य्यापि पुश्वीकाय का भीय पेछता, पृष्धाताम मनी दास्त का मार्गासमा महते पूर्व पुरुष के द्वारा (इस्तेष) है पूर्वेकि (बार्तेना) आरम्भ ्टाल मोडे ११००० राजोत जाताट का रुपन करे ज्यांग कोड़े (गीमानजा) उसके जिल्ह का मेदन करे (यामी) कोड़े (गीमान्डे) उसके । श्राम व्यान का मार्थ आणी को जेला कुल होता कि उसी नक्ष पुष्यीकाय के जीय को भी होना हे तथापि कार शतानी तीम में में में मुश्रीकाय की हिला करने हैं और (प्रणीते) कोई (अस्म) उपस्य करने हैं (हर्ण) इस प्रकार उसकी सील का सेन्स करें (वालों), कोई (बालकाने) उसकी ध्रौल का छेत्स करें (वालों) कोई (माहमकों) उसकी ध्रुफुटि का मेरन को अलान वाहे अलाक) तथका बहुदि का छिद्य करे (यलांत) कोड़े (मिटालम्बी) उत्तक लगाड का मेदन करे उत्पक्त माल का ध्रेयम करे (सम्मान) कोई (सम्मान) उनके काम का भेदम करे (समोगे) कोई (सम्मानक) उनके काम का छेदम करे (स्था। कांग्रे (मामाक्षा) उसके बाक का संक्रम करे (यायों।) कोंग्रे (मायाक्ष्ये) उसके नाक का छेद्रन करे (यायोगे) कोंग्रे (बिध्युक्तो) ्यांते, होई (क्रिमामेत प्रमक्षे जीम का मेर्स करे (ययंत) कोई (क्षिमामेत) जनकी जीम का छेर्यन करे (ययंते) कोई (तालुक्ति) भगरे तालु का मेपन करे (वण्योत) कोई (माय्यारी) जनके तालु का दिक्स करे (वर्षीत) कोई (क्तारत) जनके मले का मेय्न करे ्यको कोई जनमार उत्तर माने का छुद्य करे (बकोगे) कोई (गंधमाने) जानीत मान का सेदन करे. (बकोगे) कोई (गंजाको) म्याम बर्ग सार व्यान काराम में लगा तथा पुरुष इन बारामी का म्याम नहीं करता है।

े पुरस्का कर कार का का का का मुस्तामा को न कुन्नीर हाजीय लागी से बीहत हो बीह को परियोग्नी प्राप्त के किया है। है के कारक का नाम कर का एर न नाम किया जान महत्ता भन्ना, जिस्सा सीर मेजा नहीं है परन्तु दुश्य का प्रतुस्य में मा निर्माण कारका न साम मान कार कार कार कार कारका न करने याने पुरुष की (रत्नेय) ये ... १ श्वीवाय का एम सम्मान्या, श्वारका न करे (मल्टीके) कुमरों के द्वारा भी ा काला क्षांत हिस्स सद्देन करता स्थापिकाय का जीव भी दृख का अनुभव ती करता र र कुना ता का राज्ञान माहामाकों से यह मुत्र चुंक है कि ग्रजीशाय के आरम्भ से पापतृत्य . त न हा न है। न्या नृत्यिमान् पुरुष ता पूर्वाज्ञाय के ब्राह्म्स की क्ष्मेयन्थ का ्राप्त प्रतिकार कराया ना विकास मान्या प्रतिकास कराये प्रकारण प्रदर्शकार कराया जाता । अनातनी आरत्म कार्गस्य करा हुमती का विकास कराय कार्यकासात करें। विकास जिलाने तस्य प्रतिकास कराया प्रदर्शकारण प्रदर्शकाय के बारम्या हा ार ११ था। कर थि। इ बारमव में म वही (मुली) मुनि है बीर वही (मील्यावडम्मा) ब्रामे के रहस्य ा था मारा असमारमासासास १५५० आस्या पारण्याचा मर्बात । तं परित्त्वाय महावी स्वेत मर्वे पुरित्रिक्ते ममासकर ग्रह्मार १ व व मधारमारक खब्रुण पुर्वायक्ष मर्मासेति ममणुजाखेज्जा, जस्म एए पुरविक्रम्म-। जी विनीय अध्यक्त सस्यत्, राज्याना सर्वात स्र र मार्था र ज्यायक्षम्। १००॥ जि. वि.स. ॥ Higher than the second of the को आवने बाला है।। कि । न ६३ विषय ।। Tria . Airt

क्ष पहले अध्ययन का तीसरा उद्याक 🟻

प्रत्यापः 🗀 पृथ्वाचाय रे माराम्र का ग्याम करने याता यह पुरुष (त्रहा वि) जिल प्रकार (प्रणामारे) अतगार--साभू में वीम में तहा वि अमाम उन्तुक्तं मियामप्डियएसे अमार्थ मृज्यमासी वियाहित ॥ १६ ॥

जुलीय ज 9 ~

> मागायात क्यात वारिय रूप मात्र माम को माम हुचा की। कामनं क्लानोंने माया न करना हुका पूर्व पूर्व प्रामार (विभावित) वनगा है (० १०) गह स यमनामा है। ं १३र सरनमा मुक्त गर्च पूर्णरूप से संवय का पानन करने याला (जियामपिषण्णे) , जम : अहा म : अन्य नीका घारण की है (बिगोल्वे) मुद्धा की (विविध-विविध) छोष्टकर नात मद्रात मित्रमंत्रा नमा प्रणायानिया नियहिन विमानिये ॥ २०॥

भित्रा का याजन करना न्यांसिष्ट ॥ ३०॥

. . reft sr mr 7 seivi . .

. . 61. 1.15 . 14. 5. 4

. ात कार मात हे आयो र माम्याम बहुन उक्तन होते हैं। बाद में उन बिमामी में मुक्षि करते पाला क राम है। १८ ११ ११ ११ हा हा हो है विकास सिर जाने हैं, दमिस शासकार जबदेश देने हैं कि यदि तुम्हारे भारताम का नहीं ता पह घटन ता तहा दत्ता आहरता का इंग अब नव बहिलामी में ही का ली है उन्हीं परिल्डामी के साथ श्रीवन पलका रीमा महावीति जाम व झाणात श्राममीमञ्जा श्रद्धंनामये ॥ २१ ॥

र्गर पुरव ार ११ महाबीची वानी लवम कव राजमार्ग को (बणवा) प्राप्त करने हैं। व्याखाय) तीर्थ-काकाय का अमनम असमा कर अलम पुरुष बकुबोनया समस्त भयों से रहिन av Statt feller & einer teate

र्भाव के जिल्लाम क्यां के प्रतास के किया है। यह स्थान की क्षेत्र के काम के जिल्लाम क्यां के कि है। यह स्थान कि सम्बद्धा के स्थान कर के किया के किया के किया की की किया के किय

BUT C. W. T. LE R. 1894 Det to H. W. MERE STAN ES

म अम त्य सथ लीम अन्माद्यस्त्रज्ञा, सत्र श्रमासं श्रदमाद्यस्यज्जा, त्रे लीयं श्रदमाद्वत्तद् में श्रमाखे श्रदमा-

िमित्रा) महामाह म करे नथा (काल) आम्मा का (केंच मन्मत्तिमान) मत्ताप म करे। (ते) जो पुरच (तीर) मोस वाती मन्दरत मन्ययाय:---,त ०० म वहता है कि बुद्धमात्र मनुष्य ,००) १ववं (सेलं) अपुद्धाय के जीयों के क्रस्नित्य का (धेर यथात: स्स्ता, अ अनाता यध्मास्म्या म लीपं ष्रय्भाष्ट्यस् ॥ २२ ॥





मियिपिः--जम, जममाग के जीमी की मन्विमि है। वे उसे क्षेत्र असी है किन्तु समामी जीय उत्तमे जमरक्तनी खीमने हैं। यसः ग्रिम त्रम का उपमीग करने यांने थार्षाायान के भी बीधी बनते हैं ॥

कव्द सी कव्द में पाउं अद्मा विभूसाए ॥ २७ ॥

यन्यपायः -- बामतीर्धा कत्त्वा जन पीने हें बीर उससे अपने हाथ पैर धीने हें नथा स्नान करने हैं। यदि कोई उनसे नेमा न करने में निष् कहना है मो ये उत्तर देने में में कि (में) हम होगों को (गर) करना अल पीना (फणड़) कत्पता है (बहुना)

यन्यायी:--- सम्मतीर्ग (म्) मित्र मित्र (मन्त्र) मत्त्रों के माग (विक्रोंत) खण्काय-जनकाय के जीयों की हिंसा जनता (किशाए) करने जल में हाम कर थीता, स्तान करना एएं पस्त्र आदि घोता (काप्त) कररता है।। २७॥ पायापी: -- बारमनीर्धिमी का त्रवरोक्त कथन महासमूलक एवं सिप्या है।। मुद्रा मन्यंहि वित्रक्रीन ॥ २८ ॥

मन्यापी:-- त्या विषय परने निष्य में जिले उस बन्यतीरियों के भाम भी (जो जिक्काण्) निध्यय फरने में समये नहीं हैं भूगों कि में मात्रत्यन हिन यहन तुरूप द्वारा रचे पूर मही है।। ३६ ॥

मन्त्र दि नेसि मो मिक्समात ॥ ३६ ॥

SEASON



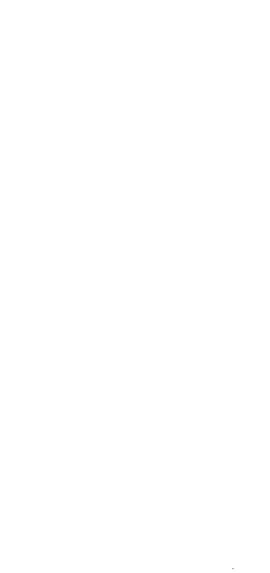


















वायाये: '५००० मः स्तीको चनने चापको साभु दहने हैं किन्तु त्रीयातीय का पानियक ज्ञान न होने के कारण में ग्रथ्यी-ने यसुमे मन्त्रममनमाम्पगमामोमे व्यत्पामोमे व्यक्तमिन्धे पार्च कम्मै मो व्यप्नेर्सि, नै परिएणाप मेहाबी गोव कावका संगति १००० करता है (११०४० वे व्यवनी इच्छानुस्तक व्यान्तकण करते हैं क्षोर (बारतीत्तवणा) निवर्त्ते में जानक करते के नथ से होने नाने मार का बागी होना है नेन्स (जान) जानी। (ते) जी पुरुष (वावारे) मानाकों (जासिते) प्रेम नहीं रमते कि मार मात्रवाजीलम पावर ते का माथ कोत्रा है। इस वक्षार अवत्ताका) द्यां काव जीवी का बार्यन करने मूच भी (निक्यं) ये व्याने ग्रत्नपाथः ("०'१) माप्रकाय त्रजा पृथ्वीकाव ज्ञानि किमी एक काय ने ज्ञारक्त में भी प्राणी (ज्ञाईयताणा) त्रोप कार्यो उसके मांगे स्मृत्य पाट का चत्रपतार्थ मूत्र तंथ के अनुमार है। उस सूत्र में अपकाय का पर्मात किया गया है जीर इस तः । ताम स्वारंपमाणा ते जायां म संति, ज्यांनमाणा पिनापं प्यंति, छंद्रोपणीया अज्जीवयपणा क्षे । के तो (क्या पक्षे ।तीरवारक्षांत्र) सुस्तिक हो जाते हैं (त) वे (क्या) पक्षे (अस्वीत) साय को जात हो जाते हैं । हैं। या त्यार ने कारमत में मानक होकर (मेंने व्यन्ति) स्वायम क्यों का ब्रामुसन करते हैं 11 देश 11 सूत्र स पायुक्तत का वर्णत है। सिर्फ इतना ही कहे है। याकी सारा चर्य सताब है।। धरे। वाणानि छ वन्त्र शिवा का मानकत कांते हुव यापक्षी के बाती होते हैं।। मार्वसामा पक्षांति मंगं ॥ ६० ॥ with efferm of mire it . .

॥ इति मथममप्ययनम् ॥

ह बर े का कथा हरका का जानन बाला क्या मुनि है।। इर्श क्यि मेंगि पूर्यत्त्र ॥

1

धन्वपाय . . आ पृत्व मनगष-वादि भाष धन से युक्क है (म) बह (मव्यममालाग्यमालोक श्रामेण) बन्तु के घथाये ार न का न प्राथ का पार रिकास की राया क्षित कर ति स्त्रम् (मुख्योर्जासायनम् १५ काम जीवी का (दिन ममार्थेजा) किस प्रथा व इत १ '८३६ १८८६ . ए काण अंति के आरम्भ को (परित्ताल कानि) जान कर न्यान कर तिया है (से

नए एम्प्रीश्लिकाणनार्थ नमार्गेज्य एक प्रत्योह छन्त्रीविधिकाषमध्ये समार्गानेज्य, पेव प्रयखे छन्त्रीविधिकाषमत्ये मधारंगर ममणुजातंत्रज्ञा, जनमण क्ष्रंज्ञोविणिकायमत्यमभारंमा परिएकाया मजेति मे हू मुखी परिएकायक्रम्मे (६१। मिनोमि

लोकविजय नामक दूसरा अध्ययन

पहले का समा प्रान्या के बाव जीवा का नवा उसके बाक्षों का याँन किया तया है। इनके स्वरूप की जानने याला मूनि

ही रामाणि क्याम पर जीर मध्योष भिष्यो पर विजय यात्र कर सकता है। इपक्षित इम हुमने अध्ययन में उनको जीतमें के उपायों का वान्न (बता अजा है। यह निर्मा राज्य मा सामादि क्यात श्रीर शायाति विषय निर्मा मंत्री हम छात्यम में उनकी जीतने के उपामें का बाल्य होता गाहु सारा जास का जान समाय मा मा मा मा है। इस सह है। 'मूत बीर मार्थ की जानने बाले मुमुतु पुरुष की म, मिया म, माया म, बहली म, बहला म, मुना मे, मुखा मे, मुखा मे, मिहसयस्तिमेश्या मे, विविचीयमस्सामि-गङ्गमागमन्द्रागम थ, १-वन्यं महिन सांग वमं प्रवनं यहां य रात्रो य परितप्पमाणे कालाकालामुड्डाई मंजीगडी यहा-

नांसी यान् में महमाकाम विलितिङ्चिन, तन्य मन्त्रे मुनो मुनो, खप्यं य सन्तु आउपं इस्पेरोसि सागवाणे ॥६२॥

ा प्रण म मन्द्राण, त प्रनद्राण में पुणे। इह में मुगद्री मह्या विषयिंगं घुणी पुणी वसे पसते तंजहा---माया

का मांपा हु स्व स्थामा . मोटु अर्थ कर्या आहिए इस बात का प्रमान पहले उद्देशक में किया गया है।

पहला उद्याक くがおいて

द्वितीय

सन्वयाय --- ३) जो (११७) राप्तादि मुन है ।ते। व ही (सन्दाणे) संसार के मुनकारण कपायों के स्थान हैं सीर (वे) जो नियम की हत्यु। करमा है। - यह (मक्ष्म) महाम् (मायममा वृत्तिम् के साथ (युवी पुषी) यार चार (मि) इस संसार में अन्म धारण करता ह सीर 👝 । प्रमान में पक्रा रहता है । मा मंत्री (मामा माता है, (में) मेरा (पत्रा) दिल है, (में) मेरा (भाष) भाहें है, प्रकार के उत्करण हाथी। याक्ष काल बाहत. भाजन कीर धका कार्नि हैं। (ज्यक्ष हमा अकार इन धन्त्रजी को ब्रायनी समझ कर ा श्यान आगान आगान अर्थ सम योगान मानकत रहता है योर जांग बन्ध बहराण के मनुष्ठान मं प्रमाद करता है (य) ्रात दिन (१ मण दनकी चिन्ना में मनत महता हुया हनकी रक्षा के लिए । शलाकाल मनुद्राई) काल चीर भाषाम माना समय थीर र समय में इड कर बहित प्रियम करना है। बालाक्ष्रींजरी व्याने बात्मीय थीर प्रियमनी में कुलिन रहता है थीर अमाध, सहा अन्या सथात साहता है। उनमें पारनार्थ (अश्लोस) धन का लोबी यन कर (आनुषे) चोती करता है सार ... । विता विवार वायमय कार्य करना है। यह मधनी कामवासना की पूर्ति के लिए। पुरा पुणी वारबार (एक सत्यं) कृष्वानताय क्षातः का आहरत करता है। १८ हम समाह में (सत) निध्यय ही (त्यम मालकाएं) कित्रने ही मनुष्यों की (बाज्य) ब्राप्त (त मांत (तर पात १ .) मांत तरमा स्वी है मा मारे पुरा पुत्र हैं, (में) मेरी (प्रया) पुत्री हैं, (में) मेरी (माया महता) पुत्रवायु है (मा मार पट गत्या का मित्र हैं, स्वत्रम में सम्प्रित प्रतिम है (में) मेरे तिक्तिकारणारिवृहत्मीवणस्त्राव्य) विविध् (करा बहुन गर । हाती है अन इस थोड़ा मी धायु के किय पाय करना भागि मूर्वता है ॥ ६०॥

द्भिय

ाय अन्यत्र वास प्रत्य वास मान मान मान महत्त्र है कि हे कुद्ध ! (या) तुम्हार ते में पुत्र कत्त्रमादि (सामाण) तुम्हारी रहा। अस्ता दल मार ास मध्य सही है। वा चौर (क्षा वि तुम भी लिन) जनकी (ताणाए वा) रक्षा करने भारत दत्र म ं स्मार्थ नता हो। (ते) यद मुद्ध मनुष्य (ज्ञानाः) म इंसी से लिय (ज्ञ स्टिशाः) न मीका ैर . १ अनम साथ नक्षा वह तियान करने हैं (माये तामवता) उस मृद्ध के पुत्र, पुत्री, स्त्री प्यं ॥ करा किसी समय ।, कत्त्र पहले या पीडे पत्कात) उत्तकी निन्दा करते हैं पद्म उत्तका श्रमाद्र काने ै । ".। । वर यद्य मार्थमा १३२ ार। याने युप्त कलामदि एव जासीय जनी की (शक्तत्वा) निन्दा करता है। ्र र र र र र अधारा था माप्रयत्त्र वर्त्त का साम करता है आपि उन्दी के द्वारा क्ष्य स्मापि विषयो द ' ४ ' १ र ४६४ है। मी ही महता है फिल्तु बुद्धायम्या म सम होन्युयों की शास्ति े १ त्य ६ त्या मिशान ए । हो बाती है नव यह मनुष्य विवक्ष्यमृत्य की जाता है ा १ १ १ से १६ से १६ थर्म राज्य है अपनी विवक्षी समुख्य की चाहिए। इडिन्ट्रियों की शाक्ति गर वा स्टंड स्टाप्ट र ११ भाषा मार्था स्थितमा पुर्वित पनित्यंति, मो या ने सिष्यंग पच्छा परित्रष्टजा, खाले ने तत रामाए रा मानमाएवा नमार १२ मान नामा प्रभाष वा मरमाए वा, में म हामाष्ट्र स किहाए स रहेए स विभूताष् । हिशा ं प्रदर्भ के कुष्या थान पर उसी प्राप्त एवं सुद न होना पड़ा। E- 1212

पुरुष को सरक बरके सारकार कहने हैं कि है देवानुमिय ! (त) में गुफ कलनाड़े आमीयजन (तथ) नुम्हासी (ताथान) रचा करने में (ग) मरवा (परवार) ग्राय देने में (वारी समय नहीं हैं (ग) गया (तां थे) नुम भी (तिथे) जनकी (ताथान) रचा करने में (ग) मारमीय जन (एगरा) किमी समय (कुल) पहले (त) उस पुरुष का (गंगंत) गोयण करते हैं (ग) श्रयथा धनसन्वयम होने पर (सी) यद (ज्छ) पीछे या पहले किमी समय (ते) उन (लिलो) पुत्र कनवादि घानीय जने। का (लेखिज्ज) पासन पोषण करना है। ऐसे दन्वपार्थः — (क) जो खबानी (रह) हम (बांका) जीवन में (पाना) प्रमाहबुक्त हैं खर्थान् भूले हुद हैं, वे प्राधियों के नाश की फिरा में प्रश्नीत करने हैं, तथा (म) वे स्वश्नानी जीव (१मा) माणियों का हतन करते हैं (श्रेम) उनके स्वहों का छेरन करते हैं (बारमांताता में करेंगा, जमा मानकर द्रव्य उपानंत के लिय पातकमें करता है किन्तु लागानतराय के उद्य से धन न मिलने पर स्ययदा प्राप्त धन का विनाश हो आने पर (अधि मंद्रे) जिनके माथ (मश्मर) यह नियास करता है (तै) ये (मिलम) पुत्र कक्षत्रादि नगा) उनके शिर थीर नेत्र खादि का मेदन करने हैं (जुगना लोगा का गाठ काटने हैं (किनुभन)इन्द्रियों का छेदन-मेदन करने हैं (३८१४०१) विष थार शखादि का प्रयोग करके प्राणियों के माणों का हरण करते हैं चौर (उनावरूण) प्राणियों को भनेक प्रकार से बय और ब्रास देते हैं। (मामानी मजानी बीब ऐसा मानता है कि (बक्ष्ट) व्याज तक जो कार्य किसी ने नहीं किया यह कार्य जीविए इह ने पमता, में हंता छेचा मेचा लुंपिया विसुंपिता उद्दिया उत्तासहता, श्रक्डं करिस्सामिति मएण्-माएं, अह वा सिंद्र, मंत्रमह वे वा यां एगया खियगा नं पुष्टि पोमेंति, सो वा ते शिष्यो पच्छा पोसिज्जा, मार्ल ते तत गखाय वा सरखाए वा, तुमं वि वंति खालं ताखाए वा मरखाय वा ॥ ६६ ॥

स्ययवा (अरवाए) श्वरत् हेने में (वाल) त्रमधं नहीं हो।। ६६।।

25 P ्रुं । । उन युत्र कलवादी बातमीय अनो की (nmm) रहार करने में (बा) कथवा (सलाण) शरण देने में (गान) समय नहीं हो ॥ इश

अन्याथः आन्तरों को (मा) मुख और (इस्प) दुष्य (कोष) मायेक पानी क्रवस मानामा प्रकास है। (ज्योक्त) यह जान कर गोग थाने पर उस कष्ट को समनाय पूर्यक सदन करना चाहिए। जािशन दुक्त पन्यं मायं ॥ ६= ॥

भावायोः—तसार मंजिनने प्राणी है नजी व्यक्त क्षिते इसमें के फलकर सुख हुःल को व्यक्ते ही मोनते हैं। कोई किसी के सुख दुश्य का भागी नहीं होता नगा वह कामफल वयस्य ही. ओगना पदना है, जिसा भोगे जमते छुटकारा नहीं होना है। बतः ऐसा विचार कर विषेकी पुरुष की समभाषपूर्व अस दुःख को सहत कर लेता चाहिए।। क्षमाभिषकंतं य राखु वयं संपेहार् ॥ ६६ ॥ जुन्याथि: (चन्तितर्काः दीनी क्षें सपनी (तर) यायु को (नीधरा) केच कर (तत्तु) निश्चय ही विवेक्त पुरुष जात्म कत्यान के जिल प्रवास कर ॥ ६४ ॥

मातायः --- तर तर इत्तितं की शरंक क्षीण नहीं हो जानी तर तक ही मनुष्य को खानों कल्याण में प्रमुख हो जाना पाहिए।

यान्यगाथः - जान्यकार समारी प्राची को कष्य कर कहते हैं कि (संत्यू) हे पशित्रत ! त्रार्थात् वास्पतस्यत ! तुम (राम) ममां त्रामाहि पेडिए ॥ ७० ॥

मापायः चार्यततः स्था कुलाम तथा वाया इत्द्रियो की युगेता चीर नीरोग यागेर की प्राप्ति क्षोता थर्म सेष्यत का यवांग्हीमा, क्रिमवनितमामा यविष्टीमा, हत्त्रेत्हि विस्त्रस्त्रीई प्रामामेहि अविहायमामेहि प्रापट्टे सम्मै रामणुरा-ज्ञात मायवांगमणाजा व्यपंत्रहीम्मा, मेनवांगममा व्यवदिशीमा, पामपरिय्मामा व्यपरिहीमा, जीइपरियुमामा नमा चापसः है। इस सकत्ता । राध नहीं मेवाना किन्तु यम मेथन करता है वहीं प्रियत है। get un etan en mane (m. ''e) ermit !) 5. !!

्रका तम तक (सर्वतमणाणाः ध्रोत्रवरिवास यानी कानी की छध्द मुसने की द्यक्ति (बरोरक्षेणा) क्षीण नारी क्षें हैं, (स्तरातः) नेको किक केलने की श्रुटिंक (बर्गासीला) पीण नहीं कुई कि (पाणारित्याला) नाक की मन्त्र प्रत्या करने की मिन्नामि ॥ ३२ ॥ चित्रंमि ॥ प्रथमेरियाः ॥

म्मांक (सर्मारेन्यः) स्थात सर्वे द्वां हिस्सार्याताः निक्षा क्षा स्वत्यम् करते क्षा स्थिति (व्याधिया) सीमा सर्वे से और

द्वि० च्यु

(citentiumen) seufaliger & arfa (wiftem) ting neil ge & (redoll) eeft nur nure, menten menten

कि क

प्रथम उद्देशक ममास ॥ २-१ । १ ॥

130 Te भारतिर्धे-कोष, मान, माना, और लोभ इन पारों इकारों में लोभ गव ने प्रधान है। लोभ के यह हुआ राखी न इसो बीस इसमें की सर देहता है। इसकिए लोभीर की छोन्न इर जिसने सन्यगुड़ान दर्शन पारित्र को व्यज्ञीकार इर लिगा है यह व्ययस माति के उपायों में मयुख्य होते हैं (हम्बं) इस प्रज्ञार (मोहें) मोह में (पुणे पुणे) पारंस्यार (नण्णा) यायन्त आसरक जीयां(जी हम्याए भावियां — क्लिसिक के विषक ने रहित क्लिजक च्यानों जीव गुरुष्यात्रम को छोक् कर प्रताजित तो छोते हैं किन्तु विषय-सोसो के साने काने पर ये जनेने पेन जीन हैं। ये न इपर के रहते हैं और स उपर के प्रयोत के न तो गुरुष हो कहे जा सकते हैं ण परण) न इस लोक के रहते हैं और न परलोक के दी रधने हैं अर्थात् उनका इहलोक भीर परलोक दोनों थिगड़ जाते हैं। धरा अन्वराष्टी:--(३) ओ (अला) पुरुव (बरणांमको) वारगामी हैं यथांत् जिन पुरुवों ने बान दर्गन चापित्र को प्राप्त कर लिया है (है) में (ड्र) चपरण ही (ड़मा) मुक्ति को मान करने पांते हैं । (ब्लीभण) मालोममुनि के द्वारा (लीम) लोग है (ड्राव्डनाधे) गुणा करने मिधुना हु वे जवा ने जवा पारमामिणी, लीममलीमेष हुगुंखमाये लद्दे क्रांमे सामिमाहइ ॥ ७४ ॥ वाले पुरुष प्राप्त हुए काममीगों का सेवन नहीं करते हैं॥ अशा मीर न साधुदी कई जा नकने हैं।

विया वि लीमे विम्हतम एम श्रक्रमी जायह पासह, पहिलेहाए यावकंत्रह, एम यायगारे चि पशुना, बही प

की माता से विपरीत यानी स्पच्छन्युद्धि से विचरण करने याले कितनेक (मुग्जि) मुनिवेरघारी (परिलेडोते) 'विषय भोग की

परस करना है। जो पुरुष लोगका रिया करके स्थम जझीकार कर लेता है यथं पास्त्रिका सिशुद्ध कथ से पालन करता है यह थोड़े इस संसार म फिलने ही प्राणी छेसे हैं जो मायु के बेश को धारण करके भी इस लोक या परलोक के सुख के लीम में पड़ आते हैं अपरोक्त (कारों) कारों के जिय (गर) स्वयं (का दंग बारा (मेनजा) जावियों की हिंसा न कारे तथा (पार्धि) एन (काजी) कारों के हैं। जिए (काण) दूसरे से मी (का दंग बारा शिक्षण) जायियों की हिंसा न कारो से बीर (पार्धि) हन (काजी) कारों के जिय (दंग बार्ग भावायः —लोग के वरतभुत पुरुष दहलीदिक और पास्तीदिक मुखों की प्राप्ति के जिस जीवर्हिमा व्यापि जनेकविषय पारा-वे काने तामायुक्तन की प्रकृता करन है किन्यु यानक मंत्र मायु नहीं हैं। जो लोग को जीन कर व्यक्ता बनने को चेट्टा करते हें के थान्याधः---(वेराम) सन्तुनस्य की ज्ञानने यामा दुष्टिमान् युरुर (१) उपयोक्र मात्री को (गीराणाम) ज्ञानकर (गाँगी) इन एएरि कटोरि हंड ममारोने वि कपणे या ममणुत्राविका, एम ममे बापरिएर्डि पंदेष, त्रहेत्व कुमले षोवित्तिष्ट्यापि ॥ ७६॥ विसंमि ॥ लोगविजयम विदयं। उहेत्ते ॥ तं परिएकाय मेहादी खेत सर्ग एएहि बन्तेनीह दंठ समारंभिण्या खेत घएए। एएहि बज्जेदि दंठ समारंगातिज्ञा, ही समय से पानीवसी का लग्न करके केषलक्षान केषलरशंत्र उपाजन कर लेता है। फल की बाह्य से जीवबात करने हैं ॥ अर ॥

तिता वातियो की हिन्स करने माने (यन्न) मूनरे पुरुष की (म मनम्बातिमका) अनुमीदना भी न करे। (माधीशीह) बार्ष पुरुषो भे (००) गरी (००) भागे (०४०० प्रमाया है) इसकिए (१०९) क्छल यांसी यृशियान् तुरम (तरेप) इस नीमर्दिसा क्ष्म स्वापार

मापाय: -- तात्र गंग चीर तात्र करण में प्राणियों की दिसर का रमाम जीर मस्प्रामान, वरीन, पारित्र रूप भाष भाषे जापे प्तयो दे द्वारा वहा माता है इसनित यहा चात्व बहां तीम्य है। इमिन्न मूचितान पुत्रत की पाडित कि इम मार्थ मार्ग की मान्नीकार द्मरं अध्ययन का दूसरा उद्याक मम्पूर्ण में गोल्टर्सिक्यमार्थाः मुक्तिमा न क्षेति ॥ ३६ ॥ (भिष्याकः क्ष्मिक्य । करमें, मारामकत्मामा सं धार्मां करें

(Ro 本·



खालं, आन्ने विग्नं मणिकुंडलं यह डिरएखेख इविययओं परिपिज्य तत्वेथ रेचा, य इत्य तथी वा दमो वा खिषमो वा 🕌 🙀 📭 यन्यायः -- (मे) यक । बच्नमालो) बज्रानी औव (क्योकाल) हत्रोगहत होता है घणांत नामा प्रकार की र्याध्यों से है ही नहीं समाने हैं हशीकिए वं पाप क्षीं का ज्याजन कर अंच नीच मांता प्रकार के तोत्रों ते अन्य होकर संसार में विध्यमण मानियों—जाकितों को अपने क्यों का यक कशरत मोकता पहना है। इस मंतार में को नाना प्रकार के दूरण भोगे अपने हैं वे सदगरिकों के कियदूर कमें के ही रजते हैं। यहां विशंकी दुरुव तायहर कमें का रोतन नहीं करते हैं परन्तु भक्तानी जीव हुए बात मनुष्णे को (पृथा आलः) अनवम अंचन (प्यः) वधुन प्रिय नमभा हैं। ऐसे समानी जीव (बारने बिरो) हंग विहेसे वन्न (मणिबुं द्वने) रत्ने हैं (याता वाल-प्रवासी अस्य (बायकामा प्रायंत्रम श्रीवन का रहार फरना कूचा (पकुष्णे) माम कुष कामभीगी की भीनता हुमा उनमें चानमा रहता है थार (टच) 'हम समार में (तमे वा रत्ती वा । तावशे वा) तथ, दम-मंदम बीर नियमों का कुछ भी फल (मोतमा वेचा मही जाता है, इस प्रधार काज्यमणे) कहता हुवा (मरे) यह भूट—प्रधानी भीष विभाषामुक्ते। समस्य प्रमार्थी पीरित बार लगन्त मोक के खपमान का वात हीता है तथा । जामाम बालुमें ग्रह गर बार अन्य मर कु के बक्क में युमना रहत है। १८) इस अगत म ामनवन्तुममध्यामामा थिन, मनाम याति प्रियह में मनना रखते याते (श्रीका दिनमेन्द्र (बालवाये) मित्या करने व कुन्न (१६००णीम मह राम्यता। नीता चौर खी खादि का (बारिएक्स) मंग्रह कर है (सधेरा अन्ती में (रमा) चारक दिम्मह, मंपुरागं वाले जीविउकामं लालप्यमाग्रे मृदं विष्परियासमुवेह ॥ ७६ ॥ को खियरीन ही कसना है। अ

महित्र कालकामामा, मन्त्रं पामा पियाउया । मुहमाया दुक्तप्तिकूला अपिययका पियजीयिको जीविउकामा, हणांव मायसंति, ने नमा प्वनारिमो । जाश्मरमा परिएमाय, नरि मंक्रमा देवे ॥ १ ॥

याया वा वषूमा वा. म नन्य गरिहण निद्ध, भाषमाण, नन्नो में वसमा विविहं पनिमिद्धं संभूगं महीवगरणं भवत, तं वि मन्त्रीय अधियां विगं, ने वर्षायत्यः दूवयं चत्रायां खित्रचुं जिया मां मंसिचिया मां निविहेण जा वि से तत्य मत्ता भयह

3 3

म गममा हायाया वा विवयंति यद नहारा वा म खबहरह, सायांना वा में चिलुंपंति, मास्मइ वा से, विमास्तह वा से,

यमारदाहण या म इन्मड, हर म प्रमम यहाण क्रमड मन्माई यांने पकुन्यमाणे तंण दूचलेण परपूर्व पिष्पिमामापुरिह,

गुरमा ह मम प्रहम, समाहतम मम, मो न बाह नरिनम, अतीरंगमा एए, मो य तीर् गमिषण, ब्रपारंगमा एए, मो

ग वारे गांगचन, यावात्मानं य यावाय त्रांस्म हामं न चिद्रुई, जितहे पष्प खर्णपाणी तम्मि हामास्मि निद्रुह ॥ ८० ॥

भनगायः 💎 अत्र 🗷 मनुष्य अम्मानः) अवनाति क्षेत्रमात् मोत्त वाति के जित् सम्पत्नातित्र का पालम

करत है ग 🕬 🔞 एन मामाशिक सिषम बोगों की (लाजरंगंत) इच्छा मही करते हैं। (जाकणो) जन्म थीर मरण के तत्त्व की ा का अ अ क का का वर्ष का भी हर हर हो कर (अरे) मिन्दे (कारमामामा मामि) कान प्रथान् गुरम् के बाने का कोई नियम ्र र है । व्याप का वार्त वार्ता का मान का मिनक मानने हैं। (यांप्यता) मभी को पथ प्रमित है। (विकाशिक्ष) मिनी को प्रपत्ता त्रीयम

समग्र नहीं हैं 💯 में सम् (१८०) वानिगों हो (एगहा) जनम जायुष्य विव हैं। (मुरावा) सभी प्राणी खुद्रा भोगना जाइने हैं।

्री फिय होता है। (जीवकाम) सभी माणी जीना चाहते हैं। (गंजी) सब भीषों को (जीवत) जयना जीयन (गिये) मिय होता है। है हैं। नगाँप सजाती जीव (ः) जानेशम जीवन को (गंगीनका जीवन) (बन्या) मन्पर अयांन ईट यन ब्राहि को (बोमनु जिया) काम में तमाकर (मिनिहेल) सीन करण सीन योग में (सीसिया) धम की वृद्धि करने हैं। इस प्रकार कटोर परिश्य करने पर (बाग) प्रत्य (बा) अथया (बनुमा) यहुत (बा बि) जो कुछ (मे) उस थम धी

|बन्यान) उससे ठीन छेने हैं (त) मथवा (त) असदी सम्मित (कान्य) नष्ट हो जाती है (बा) भथवा (क्षिएमा) विविध प्रकार से (मन) मात्रा अवर होती हैं (नव) उनमें यह प्राची (अंत्रकाण) भीन के लिय (बीएक) जायन्त्र आत्रक्त (बिद्ध) रहता है। (तक्ष) रमते पशान (मामा किसी समय मा) बर्जापांत्रन करने हुए उस पूरुन के बाभान्तराय कम के झमोपग्रम से (गरिंग्डे) भोग करने स बची हुई मनगिन (जिन) विविध वय (मरावगरण) कापी मात्रा में (मध्ये भवा) इकडी हो जाती हैं परन्तु (मे) उसकी (ते) (मे उसकी नग्पिन की कभी (अन्तर पा) चीन मित्र) चुरा होता है (मा) षष्या (मे) उसकी सम्मित की कभी (प्रवाणी) राजा उस सम्पन्ति का जिलाल कामी तो (सर्वात) कायात प्रयोत् पंतुक सम्पन्ति के आपीश्वर (विभवति) योष्ट कर से हिते हैं (बा) स्थया

नष्ट हो जानी हैं ।वा मधवा मो उनकी नम्पनि (बमादात्म) घर में बाम लग कर (डब्ब्ह) जल जाती हैं । इस प्रकार (बस्त बहुत)

दुसमों के किए (क्राट) मूर (बमार) कमें (पक्रुनमाण) करना हुआ (म) यह (बांड) याल-प्रकाती (तेण) उस पाप से उरवस (इस्तेण)

हुन्य से (मम्द्रा मृद यन कर (भन्तारवामव्या कर्तव्य यक्तरंत्य के विवेक से हीन हो आता है। (मणिया) धी पीतराम देव ने (हु)

निक्षय ही (एत) पढ (प्यार) परमाथा है कि (एर) वे कवानी जीव (क्लीरंसर) संनार-सागर को पार करने वाले नहीं हैं।(क) बीर वे (जीरे) पंसार सागर को (लीगर) बार करने में (जी) त्याये नहीं हैं। (ग्ल) वे कबानी जीव (क्लीरंग्ल) संनार कागर के

मिलिपिं:-- जो वसनु स्वरूप की देखने वाली है उसे पर्यक बहत है ख्यवा फेबबझान के द्वारा सप्तत परायों को जानने वाले दारीरिक और मानसिक दु को से पीड़न यह (दृष्णान्नेत्र) दुःखों कै(बाष्ट्) चम्र में ही (बणुगीयदा) नदा घूमना रदता है ।।=१॥ आमक्त रहने वाला पुरुष (अल्लियहरेन) विषयभोग बार कवायों से उत्पन्न दूख को सान्त नहीं करता है। एस मजार (कुन्मी) तीयैक्स भाषान और उनकी आझा में चलन वाले पुरुष बरवक कहतान हैं। इस सब के लिए उनदेश की छोई आबरचकता नहीं है। गमाद से सोक्ति और जियबोगों से बानक ब्रह्माओं पुरुष शासीकि कीर मात्रीसक दुःजी से सरापीक्षित होता कुम संसार पक्त से परिश्रसण काता ग्रहा है : इस्मेलर जियबों पुरुष की गायांपितमा विषयमोगों का सर्वेशा त्यास कर देशा दाहित ॥ वेस्तत ही बाहत से निष्टांत बोर हित स प्रवृत्ति बरत है। (1न बाम) युष्यम् ।

तीमरा उद्गुक समाप्त

द्मरं अध्ययन का चतुर्थं उद्याक

नया मे नम्म संमन्यामा माप्नात्रीत, बेहि वा मदि मैयम् ने या में प्राम नियम प्रिय प्रियोगि, मी

या ने मित्रमं पच्छा परिषट्टमा, वार्त्नं नं नव नामाव या मरमाव या तुमंत्रि तेसि माले नावाप, या सरमाव या, जामिष्य

गंग रागत हो जाने हैं जब (भर मांद) त्रियक राग्य (मेमार) यह रहता है (मे) थे (मिलमा) उत्तरे आस्तीय त्रत (मांमा) कभी ्र ग पहले हैं। (मा तम नानी पूरम की (बोममी)) अधक्षेत्रता एवं निन्द्रा क्रमों हैं (मा) मथा (मी) मार भी (मन्त्रा) भीतें (मे) उन (म्या) नामान त्रतो की (अमाम) यानदेवना वर्ष निष्या करता है । ब्रांसी पुरुष कत्तने में कि (मे) ये व्यास्मीय जन (मा) पुरुषारे (- नम्, वान (म) वा (मानाम्) भवन में जिय (मान) ममर्थ नार्मि में (मा) चीर (पूर्व लि तुम भी (तिमि) उसके जिय (मानाए) प्राम यन्त्रवायः - (त्यः) विवयमोग मं व्यानक्त वहां से (मे) उस निवयासक्त पुरुव को (एम्स) कभी (मिम्मुलाम मुन्तर्यति)) र्षम प्लंग मार्ग, मारा म य माम्मेर्गित इहमेरोमि मामवार्ण ॥ द ॥

भागमा पक्रम है गया (आण्डि) मान कर रोग के बनाव ध्वयराता म चातिय ((१६) इन्त संवार में (एपेप) किलोक (पाणपाणं)

..... -. म रत गरार के भिषार उगम्र होने हैं कि (बोबा) ये मोम (ब) सेरे हैं, मिर इन गोगी की किराने परिष्रम

(का) का (मामामा) दारमा कव (मान) नहीं हो वनमें हो। (मोन) प्रामेक प्रामी को (दुर्ग) त्रापना-चपना झुन्त थीर (मान) रहता

मावार्थः — किएरसंग दुख्करप है। उनमें ब्रासक प्राखों को घनेक प्रकार के रोग दुल्सक हो जाते हैं। जिन माठा पिता को

को गागविका में बाग-सरता कर नहीं हो मकता । इसी तरह बहु मजुरूप भी इक्यानि हारा भन्ने ही बग्तो बन्धु बान्ध्यों की सहायता कर परन्तु उनकी शारीशिक व्याप्त को तो वह भी नहीं बिटा सकता है। इसलिए शेग एक हु सभी उन्होंने होने पर बिहान दुक्त विस नितिहेंग जा वि में तत्थ मजा भवड़ थाप्पा वा बहुया वा, में तत्थ गहिंदए जिहुड, मोपखाए, तक्रो से एग्या विवर्तिनेहुं तक्षेत्र महावत्तरण भवड, ति वि से एगया दायाना विमर्गन, धदचहारो वा से हिंद, गयाणो वा से बिलु⊸ पुत्रादिक निरमनुष्य दो जान लंडा कर तथा कोनों कहों की परवाह न करके धन का उपार्जन करता है ये व्यात्मीय जन उस महष्य म (कसाप्रकार को प्रदासीतना नहीं लाने हैं। उसे वेष्यस्त कर्मका फला तास कर सममाव भीर धोरता के साथ महत्त्र कर कोते हैं। पनि. सम्मह या म, विज्ञामह वा मं, अगारदाहेण वा सं इज्याद, डड वाले परस्म थड़ाए कृराणि कम्माणि षङ्ग्वनाषे तेश दुक्तेस मृद्र विष्वभिष्याममुबद्ध ॥ ८३ ॥

बन्दाथः—• हत संतार में कित्रकेह मनुष्य (जिक्षिक) सीत करण तीत योग से घनोपाजैन करने के लिय किन परिप्रत करने हैं। इस प्रकार कविन परिश्रम करने पर (करणा महर (वा) साथया (बहुणा) षहुर (वा कि) जो कुछ (वे) उस धन की (सता)

मात्रा (संदा होती है। त्रप। उसमें वद (सारणार) भोग के जिय (मंद्रिश) यायत्रत (पेंडर) रदता है। (तस) इसके प्रशास्

(एक्टा) किसी समय (क) प्रनोपानंन करने हुए उस पुष्ट के जानाम्तांद को के स्वनीवनम से (गरिन्द) मोत करने से बची

130 M मी उठ निनिध प्रमार में मण हा जाती है। व स्थता (में उत्तकी सम्मृति (अमारामेन) घर में ब्राम लग कर (क्याद) जल जाती है। मूरे मम्मीम नेताक, निवित्य वर्ष (महानम्प्त) कामी मात्रा में (मंक्ष) इनहीं (चक्) हो जाती है परवतु (मे) बत्तकी (में मि) उत्त परणीय को जाल) कथी तो हरणका बागाव स्थान भिष्ठक मश्मीय कैसाभीवार साई पन्तु सादि (विवर्शत) पोट कर से तिने हैं (स.) कायमा (म.) उसकी सरम्यांभ को कथी (चन्नाता) मोर (चार्यर) बुरा ते जाता है (मा) घायमा (मे) उसकी मरमांभ को कभी (राजान) राजा (५५०) रतस्त्रक्षित क्षेत्र हैं (११) अथया (वै) उसकी महम्ति (मावा) नयु हो जाती हैं (वा) मथया (जिलात) रम ग्रमा नाम । सरो में क्षेत्र नाम क्षेत्र (म्मार) क्षेत्र (ग्रम्माक्षे) क्ष्मा क्ष्मा (मे) यह (ग्रामे) पाल-प्रधानी (ग्रेम) देख पाप मागाथः चन्नाता प्रम धनेतामन के निमित्त नाना प्रकार का जारम्ब करने हैं किन्तु यह धन उनके मित त्राम शामा कर में उनमें (११ १०) मू मा में (१४१) मुख यस कर (१४१) बामें ह्यां क्रोंड्यां क्रोंन में क्षेत्र में ब्रीन में जाना में 11 में 11

अहै। हातर । यह विचारा करण अपन वापकम को अपन माथ लेकर परलीक में जाना है जीर यहीं नाना प्रकार के दूंखीं की मीगता याम म छद म निर्मान भीम, तुमं नम में मह्ममाहदू, जीन मिया तुम नो मिया, इनमित मायनुउन, ति जै जागा महमारुस, यांत काण पत्र्याहत, न मो ! वर्षति एयाई खाययमाई, मे दुसलाए मोत्राए माराए माराए गारपातिति-क्ताण, मवप पर परम जामिताला, उताष्ट्र शीरे, अष्यमात्री महामिति, अलं कुसलस्म प्रमाएलं, मेलिपस्मं संगैहाप, मेंउर-I diffite the to tite expect to every the every in part, there, where प्रमी मेपद्राप, मान्त्र पास, यन्त्रे नय नमित्र ॥ ८५ ॥ भान्दपायं. हात्यवार पार पुरव को सम्बंधित कर कहते हैं कि (धोर) हे पीट! तुम (बाध) बाह्य (ब) धीर (धंर) थाएउ १ गा १ शाम वासी त्रासहतो बुरन को (मान्त कर) सर्वता प्रमाप्त नहीं करना चाहिए। (ब्रिक्सण) छान्ति प्रधानि मागत हा कथाक, के अब उपायों से १ मरा आतो की आति होती है, सभी २ (तण उन्हीं उपायों से (ली बिता) मीपों की प्रण्य नहीं भी होनी हैं - अंतर मांस्तान म्थणता। मोह से हैं हैं पूर्व हैं में (स्प्रीत) एस मान को (प्राव्यायी) महीं आनते े १ भाष भाष्यास्तर्भरा पाइनहै ।मा) हे जिल्प (तिने कहानोहिन अपि (बरोत) बहते हैं कि (पराह) ा गामा ह मायन है दनक विता शरीर की दिवति मही हो मकती है परन्तु (वे) उनका पह अन्तरू कर नेपन थार के निय हाला है . जिस्सीर तही हुन से पाड़िस मूड जीय (थम) यमें को (जिमित्राण्ड) मही जानता ं र अमत अगवान महादीर स्थाता ने अरहू, जत्माया है कि त्याताहै) महामोह कर छियों में (मन्यानी) प्रताम न पनना ें माम की इनमा का काम रहा के दा (उम के तुम स्थय ते तक्ष) मोत की माशा क्ष्य ग्रह्त को (बाह्त) हरूप में बाह कर कुन ** कुल के विषय का अन्य का अन्य के जिय (लगामा) मरक के जिय प्रीत (एएमीरिशनाए) मरक से निकास मोछ कीर मात कथीन समार के स्वक्ष्य को (नत्ता) विचार कर नथा (नेज्यान) छरीर की मश्यर (मीराप) आन कर प्रमाद नदी करना चाएव। हालका परमान है कि घोषक भोग मान होने पर मी वे (एन) इच्छा की सृति करने में समधे मही है भीताये:--[हतादित के मात में दक्ष थीर पुरुष को लरव करके राखकार करते हैं कि हे थीर! तम बासा को बन्ती जिल्ल (१७०) वह देखो । (अ. हे सहमारित्र ! तुम की (एरी ब्लं) हम विश्वयहोती से घवोज्ञम वहीं रक्तना व्यक्तिया। इष ॥

, | fa o m. िहोता है गएन सीम बाझ नहीं होता को हो का वरिमाम विकित्त है इससिए इस्पादि द्वारा जिल उदायों से एक मनुष्य को भोग की मामि | | , ... मणमा १ १००० मही मवमाना है यही पुरुष क्षेत्र्य है। यह मुह्म (म) मुक्ते (म) नहीं (देह) देता है। (म) ाला का का का वारत मात्रा पुरुष (43) पीर दे और (कांकिए) मेगी हारा भी उसकी प्रशंता की जाती है। (3) जो तारात सम्मा सम्मारी, रस्य मान को (माम) सुम सेन्तो । (केष्णां) किसी मी प्राणी का (लाइणहान) मध्न न करी। क्षानी है करण क्या की सह को सही को होका है किया च्यासी तीय कसीकी इस विधियता को सक्षी समानके। में क्षत्र जीर जी गान्याचे गहा का मान्यकार मुखिका बस्योधिय कामे मूप काने में कि (गुणी) दे मुने। (एत) मोगो की स्नालना स्थात स्थासः क्षित्रका के स्थान सिन्त का अन्त स्तातने हैं। वे सिन्नों के प्रतेषे में तथ कर तथा सिन्यमोगों में साराफ क्षेत्रक थानेक स कारत काल ता । राज्यत संगट रहत हे दूर्यालय जनामुक हिल के जिन अन्नाम समामीन स्वामी से प्रसाया देखि क्षाननामा सरमारणे के कार्य हे हुसकसमात्र कोई दुसमा वन्सत्र तक्षी है। इसको जीत लेग पर बुसरे पिषण सुगमता से दु स्थ स्थान है कोर तरन के नहता को की सामत है। यही से जिसम कर निर्मेश जीति से स्वीर फिर नश्क मनि से जाने हैं। इस प्रकार लगं वाम मूर्णा ' महस्भन, माहबाहत्त्र क्षामं, एम वीरं प्रमंगिए, ते मा मिथिउत्तड व्यापाणाए, मा मे देश मा कृष्यत्या याय लद्धं मा स्वयमः, प्रद्याक्षियां वृत्यामिज्ञाः, स्यं मोनं समगुरासिज्ञासि ॥ ८५ ॥ पि येसि ॥ होत्र एक राज्हें न्याका जाक पृष्ट का जनकाती संक्रमी प्रमास न बनना चाहित।

ें थिमा पर जान का गम के क्रान मोध नहीं करना वाहिए। बचया गुहरध से (थोंने) धोड़ा ब्याहार (मंद्र) मिलने प्रर (ज 'how' अस मिना म बन्ता आहिए। (तम्माहका) मुहस्य ब्रास्त नियेश करने पर वर्षात् भीरे पर मत बाक्षों इस मना बर हैन पर ंति मन्त्रा उस ग्रहरा के घर से नीड जाय अर्थात् उसके घर में त जाय। (एव) इस ग्रहार (सीण) मुनि के मन भावापे वयामणा का जात लत वाला पुरुष सच्चा बीर है। उसदी बहाता इन्द्रापि देव भी हरने हैं। यह पुरुष सचमा-स अप लन में तर्र, राथ क्षा गहरम के घर घर भिष्ठााह के निर्मात जाय तथ उस गुहरम के पास सान योग्य भम्पूर्ण मामुद्री कहाण हुए में उन्हर ताह ने कर कर सामानुष्य भाषा क्षेत्र में कर है जह कर कोड़ा दोन है हो मानुनका मोन्ना न कर ने था कर कर कार कर में कर में काम मानुका मना बर है हो मानुनक घर से होस्त करियाव । यह मुनिका ब्याचार नुष्टान म कर्मा न्यामान नार्म होता वा क उत्साह क साथ संयम का पालन कराना है। है। मुखिना इस र प्राप्त क रहता के साथ यात्र म सम्मा चारिता।

इति चतुर्थ उद्शक समाप्त

द्मं यायान का पांचयां उद्याक

त्रांगम विकास मिलार क्याना क्यानावारमा क्यांनि, नंजहा - क्यांको से पुत्राणे वृत्राणं सुवाणं नार्वेणं

वान नाम म्यान के जिस (मीमाहमीमान्या) जाच प्रमायी का सथा भोग्य प्रपायी का संस्था कि का समाचार का प्याच किए (स्वान प्रियो कि स्थित (स्वान) पुत्रपत्रों कि स्थित, (माईम्) द्वातिमानी कि स्थित भार व रेस्स १८९ १ राजा में क्षेप (ह्याला) बारों के जिल (बानीय) बारियों के निव (ह्याकरात) कर्मचारियों के निव कत्रकार्थालको ११ क्ष १८ १८ १ मध्यियो के जिब (प्राक्षिताल) चावते सम्बन्धियो के महा भेगाने के किय (गामामार) न साथ न किए (१०० वन्तीर - नामा सन्तार में १००३८) शास्त्री प्राप्त (बनामामारमा) फांग्री का चार्ष्यक्ष (बन्त्रीम) फर्ग्यो में (मंत्रहा) दैरिते अन्यायः । (तः विवहोतः रण) इत्य (काणातः) समम् का यथार्थः स्वक्त्य मही काता क्षेत्रं कोम मूख की प्राप्ति थीर मूल थाईमो गार्मा दामानो दामीनो फम्मकमानो फम्मक्रीमो ज्याव्याव् पुद्रो पहेमाव् मामामाव् पायरात्राव्, संभिष्ठिसंभिन्यो कुलाह, हहसभापि सामायामां सीयमाण ॥ द्रष्ट ॥

का का का का किसोक (सम्माम) सनुक्षी कि (भोषणाण्) भोजन के जिस प्रमुश्री का रोग्रह





हम असे। क इन्त्रिय कसी नी वस्वात है। यन में से व्यक्षण-प्रमण व्यवस्थित और कुर्मन्य प्रार्थे ही मिक्सने रहाते हैं। पेसे व्यवसित त्रो विवक्त मार्ग्य विवय वयाय का स्थात कर हेता है बड़ी बुरुष इस जमान में बास्तविक बीर है। तथा जी बुरुष इन्य और भाष बीती मागाय:---ना नाम लाक नीर माम के स्वरूप की जानने पाला पुरुष है पह इस बात की जानता है कि संवारी प्राणी कामधोग की बाधि के किए माना प्रकार के मानम कार्य कार्य कार्य प्रका क्रम भोगते के जिल मया मंत्रार पात में यूपते रहते हैं। तामार सामार सामारिया मन्दर भव में हो पूर्ण क्ष्य में हो पूर्व क्ष्य होती हैं, दूतरे भयों में नहीं होती हैं। जान क्ष्म निष्य को जान कर सानि समनित्र मनामी को यहाने मानी इनिक्रमों को नेमना है। जना (बील्ग) पनिष्य पुराप (बीक्षेत्रा) इस ग्रुरीर के इमद्रम को प्रकार र कामनी मानवम मुण छोक्र दूसरे जीती की भी बन्धन से मुक्त होने का उपदेश कृतता है वृक्षी पुरुष बीद है।

म नाम गाममाम मा म मु लालं पञ्जामी, मा तेमु निरिज्यमणाणमानामम, कासंक्तं वतु अमं ग्रुसिं, बहुमाई कत्रण मृत, मृणो नं कांड लोहं पेरं नव्देड व्ययमाते, जिमिनां परिकहिज्जह इमस्त नेव पडिनुहमायाप, व्यमरापद महाराड्डी त ताताच गाता पर शूद संवय का पात्रन फरता है।

गद्रभगे तुर्वहाण व्यवस्थितात्राण क्षेत्रह ॥ ६४ ॥

वराजी से पुण चीर अम्बर इस मिनि क तक्व को जान कर विषय विषय इसमें शाम नहीं करता है किन्तु वह श्रीशिष्टि समस्त प्रायी



ने नं मंत्रभक्षाणे यायाणीयं ममुद्राय तरहा वायं क्रमं मीत मुज्जा मा कार्यज्जा ॥ ६६ ॥

कि ज

(पानगमान), रामसता ह्या (के) यह र एपुँ (काडकार) सावरहीय जाती सहण क्रमें पोष्य बात, क्षीन धीर जापित की (माझप) ग्रज्याथः – (*) वालियो की हिमा के ज्ञारा जिक्तिमा का उपवेश देना ग्रथमा जिक्सिया करना पाप का कारण दे पष

मावाधः अस्ताकान का जारित का मात्र मात्र मात्र कांग पात्र। व्यतमार स्वयं साप्तम कार्य व दुन्ती मी सहल करते । परा संस्थान संस्थानन विमुचित्र सम् दि हमलित । यसं मधी सम्बन्धां संभा प्रमा) क्यांसं सं क्षते चीर (ण कारोरमा) विमा मन्त्र मस्य । व्यवनामुग्रा छम् अम्मायनिम, कृषह मुहुड्डी लालापमाणे, मृष्ण हुम्तेण मूदै विष्णियास-अकासाय कीर करने हुए का अभी भी न वानी

men et ift er ment it if. !

मन्यासि: ्राक्षण) मनि (ज्या ए काम के मामियों में में (एकर) किसी एक का भी (विवासप्ता) बारश्म करता है पत मुराः, मण्ण विषयमाण्ण पृद्रो ययं वक्तुत्वः, त्रीममं वाणा पत्त्रियाः, पडिलेहाण् मो णिकस्मायाण्, एस परिएणा पर्य-

त्त्र, कृष्यायमंत्री ॥ ६७ ॥

कावा में सामर्यातमार्थ करमा दूवा (म्र) खबानी जीव (मर्था) ज्यन्ते किये सूब (दुभंग्य) दुम्ब पत्न मृते मात्ने कर्मी द्वारा (स्पिरि-(स्व कमार्याम) ए दी काय का ज्याराय करता है। (एड्डी) यांयारिक नियय मुख की इच्छा करने याता (जान्यमाणे) मन, यथन









ं । गर्मात् वरः । गर्मारं नं नार्माप्यमं माष्यं को विचार करना चाहिए कि यह पुरुष कीन है। यह मिल्पात्रप्रि है या भद्र-. न कराम कर कार्यक स्थार करार कराय के । इससे यह राजा महाराजा मृतिक होकर माशु को प्रपनी इत्यानुमार बीर दुएड ार्गा का का का का का अनुकार अंग्यूय समयात ने करमाया है दि-प्यमीपनेश करने वाले साधु के पास खाकर . . . अस्तर स्टार्स स्टार्स स्टार प्रमान पटे हुए पुरुषों की योगना की देख कर दुरुष दोष काल भाव के अनुसार भारता राज राज मीर सब सावित सम्प्र रोडर रहता है। यह पुरुष ाहुनाम् हिमा से (को किया) लिस नहीं होता है। न ार साम मुक्तार का सम्माय का (जलक्ता) खब्येयन करता है। पून) भीर अन्त्रेयन करके जिसने (कुन्ने) घाती ा प्रसार के के पार का कि को का का का का का करका करना है यह इस लोफ से झानि को प्राप्त करता है और पर-ं रा रा रा रा राजा राजा राजा महाराता वैद्या हो शीर यह खन्यहर्जनी ही तो मानु उसके वृद्त का एकाएक स्थाउन नारो एन प्रामिता हो । . . . मुक्त करने त समाध होता है। (त) यह पुरुष (मज्यो) सब काल में सबे प्रकार ते (गण-न (स्संस्य प्रमायस्य क्षेत्रा भेषीर गरी। (सर्) इती (बर्) सीनी थोर (सिस्य) तिराप्ती क्षितात्र) विद्याशों में (बर्दे) क्रमैयन्थ क्षेत्र १० व १ मर्ग १ ११८ व्यक्त हमें दी चिथि मीखनी चाहित प्रशान धर्म का उपदेश करता चाहिए। भ्रातिक समासक्ता को मान सक्ता कि ज्या (भ) जो ज्या क्षेत्र काल भाष को क्षेत्रकर उपकेश केता है, (स्त) बर्का (गर) भार ार ना नेर प्रन ररा प्रंत्याव टे बीर (क्राज जनक) क्सी का सात क्रांसे (रोक्षणी) कुशल दे (य) खीर (ते) जो रिकास्ताता . . . तथा न्यत्र नृत्य तथा वत्र ही हे जीव (ले पुरे) न पुत्र ही हि ॥ १०२ ॥ त मा धर्मातरू क्रें वांच को सही जानना है उसकी सीन बहना ही खद्या है। A 8.41. W

ê रण करना पाहिल । डिज कामी मे दिमा होती है नथा जिम कामें का चापरम प्रातिमी ने निवित्त बतमागा है उमका क्यापि माप-यवानी '' र राम कुन से सार्थन और क्यानों के कीतृत (एक) अथा कामामानुत्ती विषयमोती की मतीत्र मान कर उनमें फरनगारी: (. umn : त्रा मनुष्य बाववान हे रम के निव्ह : में में) जगक्ष की जायद्वमत्ता (बालि) नहीं है ! (बाने) याब-प्पारम रहत वाल क्षण का का का का कि व वोत क्षा के कापन कुछ को मान नहीं करता है इस महार (तुरारी) गारी-किया को समामित्र कु मो मा मीक्त यह (दुमा ०००) कु मो के यातहू) यक्त में की (बल्तीमाइड) महा बुमाना महामा है ॥ १०४ ॥ निविधि: तो बातुम्बरण का बतन बाला है तम प्रथक बहुत है। खब्बा हेपलब्रान के ब्रारा मामन पदार्थी की जानने पाने उरमा पामपम मन्ति, यन एम मिहे - क्षमममणुममे अममिमनुत्रमे दुस्मी दुस्मायमेव आवडे अणुपरिगड्डह मांगर माममान को उनको काना मानका नाक प्रमान नामक कहतामें हैं। इस मन के जिस् नवर्षेत्र की की है आग्रियक्ता मही है। रागार स मारत जार (मनमा म नामक अमानी मुक्त मारीतिक जीर मानमिक द्वानी में नद्रा पीतित होता हुआ नंसारतक में भेर आमा माना है। इस्तामा मियकी कृत्य का सामादि का नथा। विषयमाति का मर्मभा स्थाम कर देना चाहिए। A tray of when is lauffer with fear is unfer unn & i 11 202 11 For affer 11 # 19 # # 11 1 to to (1) # # .)

॥ इति लोक्विजय नामक द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥



कतानी आज मनोक्ष कप स्मानित मानाचीर व्यमनोक्षा में हैं व करते हैं किन्तु पिषेकी गुरुष बीनी में सममान रखते हैं क्वींकि राम-माना । (मानाम) मान के मानार ना मानार ना मानाना (मामिना) जानकर किसी भी प्राणी की माल न करे। (हम) हम छ। कीम के लोक संस्थान मान का प्रयोग न करने कृष भयं नामान्य का जाध्य हेना नामिय। (स्मे) में (म्म्) ग्राव्य (प्या) क्य (स्मा) रमा (र.) तामा १८ जीर २५ - मर्ग १२म (द्रव को (व्यवाकणाणा) पूर्ण क्य में ब्राप्त (मिनि) हो जाने हैं मही पुरुष म माजानिक द को को प्रांत हो। हम्मिन च्यान में उन्मुक्त के मिन प्रयक्त कामा पादिए। व्यक्षान के प्रशिक्त बीकर तीप ातिना का दिला कामा है एवं 'वर्षा वाप न्यानंत बाता है नगका कता मीमने के जिल्लाकादि मिन्ती में बाता है। आर्थकुत्र, यन्नवायः काम्याः कामः संस्थां में विष्युर्वे इस लोक्षः वि (पुगः) वदान की (बिरायः) त्रक्ति के निष्दं ते यह (जाण) म मागर्न मागर्न नंगर्न भक्तम् बंबन् व्यातालेडि व्यापाला होषं, मुणीति यन्त्रे, भक्तपिद्धति श्रंज् व्यावृद्धतीष् नोगीन जान प्रक्रियान, दुसरी, ममर्च नोगस्न जानिका, इत्य सत्योतस्य, जिसाने सदा य इता य राग च नाम धन्तिमान कारित का मिलाम घड़ा क्रिन हैं। द्या वाम कर खान के नाम के सिए प्रमय करमा चाहिए। म ब्रामा य पविमयममामामाम वर्षित ॥ १०६ ॥ लाक का मानम प्रांता है। १०६॥ Continue of the Continue of

मिनगारः —(त) पह पुटन वाल्य) ज्ञातम्यान है (लाल्ब) झानवान है (बेल्ब) घेद श्रमांत बाबारांनादि सूत्रों को ज्ञानने 🐧 प्र० छ०

भीवाथः -- ने काःमधान म्नानवान आदि उदगेल निशेषको वाला मुनि है यह ससार छे मूल फारका रागहेष को आन कर पाला है पमता यमंत्र है (बन्द) प्रवाह है। यह ाजमाणेहैं। मिन मादि बानों के द्वारर (बीजे) लोक को (परिपाण्ड) जानता है, चडी (मुली। " मुनि (ब.च) कहमाने के योगय है। (यमविकाल यह धर्मयेका है। यंत्र) मरल है। यह (यमसीए हंगे) संसार क्ष जावर्ने उन्दे छोष रता है। धन वास्तव म नहीं विद्वान और धर्मज्ञ है।। मीर योग न तम को (यामभाग्ड) मानता है ।। १०७॥

मीउप्तिखच्चाई से खिमांथ झरहरसाई, फरुमयं को वेल्ड्, जागरवंग्रेबरट, बीरे एवं दुक्छा पप्तुक्छिमि, जरामच्जु-यन्त्रपार्थः ─ (साशक्तरकां) नीत मौर उरण की खागने याना यानी तीत भीर उरण के कप्त को सक्त करने पाला ष्रोषिधीए मार सवर्थ मुद्दे धम्मं द्याभिजाण्ड् ॥ १०= ॥

सारी (ते कर) नहीं समझता है। (बच्च) वह तुरव मर्सदात्र श्रीचन करा मामीज्ञा को स्थान कर बन्दा जारात रहता है। (बैर गए) वह पेरमाय से सरा निष्टच रहता है। (ए) रस तरह (बी) सीर पुरच (इच्च) कुरबों से (ब्ह्चांबी) कुर जाता है। (बंदा पुरुतीर्वाण्य) जरा सीर मृत्यु के यश में आने थाता (छो), पुरुष (अवर) गर्दा (मृद्रों मृत् है। यह (मम्) धर्म को (क्रांभिजाष्ट) नहीं (मर्सरारी) कलंगम में करित चीर संगम में रति रखने गाता (है) यह (रिलारे) निर्माय (कामा) परीयह चीर उपलगों को पीहा-

मायायः — त्रिमने खाष्यत्ता और वात दांना प्रकार की प्रतियों को तोच दिया है, ऐसा निषंत्र्य न तो मालारिक सुन की

मु• च ည इन्छ। कामा हं और न क्षां में घवराता है किन्तु वह खानुकुन श्रीर बनिकुन तब प्रीपहीं को मामाष्य पूर्वक महत करता है। तेमा थन्याथः – भाव मे जागता हुक्षा पुरुष (को ४ खातुर अर्थात् शारीरिक छोर मानसिक दुःस्य वाले हुए (वाणे) प्राणियों का (मांग) तथा कर (यम्माम प्रमात रहत यन कर (मांग मा) संगम का अनुष्ठान करे। ग्रास्त्रकार फहते हैं कि (गर्म) हे महिन मन रे प्याप से सोधे हुन औरों की दुईता को केलों। (णं) यह (मंगा) मान कर माय में मोने का निर्मार मन करों। (रंग) गए तो प्राणियों मे नाना प्रकार का (रमा) दु ख देखा आता है पक (ब्रारंभनं) ब्रारम्म अनित है (स्त) पैत्मा (लप्प) ममझ कर, पानित बाउर पामे खष्पमना प्रित्या, मंता एपं महमं पान बार्रमंजं र्क्सामिषं ति गन्ता, माई पमाई पुग ण्ड गरम, उत्रहमाणा महरू यमु अन् मार्गायमंत्री मरणा पमुरुचंह, अष्पमुना कामेरि, उत्राथा पायक्रमेरि, बीरे अष्य-गुन ने संगतम, ने प्रजनजनायमन्यम संग्राम स्थमन्यम संयक्ष्णे, जे ध्रमन्यम क्षेयक्ष्णे में प्रजनजायसत्यस्म स्वयतमा, प्रक्रमस्य वष्टारं म विज्ञह, क्ष्मुमा उपहि। जायह, क्षमं य परिलंदाए ॥ १०६ ॥ वीर पुरुष भारतिहा का त्याम कर अयम म निगन्तर रत रहता है। यह ममस्त दुःखीं में बुट जाता है।।

्राह्म (merfavirit) मृत्यु मे शंका रखने यात्रा पुरुष क्या प्रयान करना है, कि (मुख्या) यह मृत्यु मे ही हुट माना है। (क्लिंहि) जो

होता है। (संस्कार) अस्त और क्याहि विषयों में (अध्याला) समग्रेप संक्ष्ते याता और ही (अंच्) यास्त्रिय में सरक्ष के तथा मारम्भ नात्र बत्र का प्रवत्त करो । आहे) मावादी थीर (बत्र) प्रमादी बुद्ध (क्ष्ण) चारवार (बन्ध) वर्षताय को (क्ष) प्राप



no no

शमक्रेय में फ्लें हुव जोब के। (महण) आज कर वर्ग जिल्लामां) त्रीक संद्रा के। त्रावीत् विवयमीय तथा करायों के। (बंग) छोड़ कर बुक्षा खर्थात राम क्रम मे तिम न होता कुत्रा (मेहार्ग) युतिमात् पुरुष (र्ग) कर्म श्रीर रामक्रिय क्षी (र्गाणाण) न्यान कर तथा (नोग) (ज) जिस (एण) त्रण में (बम्प) क्रमंत्रम्य हो उसी द्या में (बाहुग) उसकी निमृष्ति क्रमंति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति नीट - "ममाएन मा एक मिलीहर" के स्थान का "ममामाहम में क्या माण व्यासाहम भी देन्दा नाता है। जिल्हा क्यों हुन प्रचार हैं-(पानकामिनाम) स्वाम का त्रामुख्या करे ((मिन्धित) मेमा में प्रमुख्य हैं ॥ ११० ॥

यग जिस आण मं मनंबरणमहारक कार्य हो आये असी आण मं सावधान होकर कमं के कारणों की निमुष्ति कर ऐसी व्यक्तित। भीवण्यीः -- (मन्त्रास्य, व्यापत्त, प्रवास, क्ष्यांत्र ब्रोत ते क्ष्में के मूल कारण हैं। इन्हें जान कर विषेत्री युक्त क्ष्मण ग्याम का मुंब क्योंग गुज़ सम्मा क व्यनुष्ठान से प्रयम्न करें ॥

॥ इति शीतांन्जीय अध्ययन का प्रथम उद्गाक समाप्त ॥

यन्त्रराषीः — (तं) जो (नमाम्न) कर्म का मूल कारण हि उसे (त) थीर (क्ली) सिंता को (पीमीरिय) जान कर स्थाग देवे।

(मण) पूर्यांक स्वमन्त त्रपरेशो को (मामाम) प्रक्रम, (ब्रांगींक्ष) राम और प्रेम (क्षांक्ष) मुन्ते के साथ (बिरामामो) दिलाई न देना

that where the best



साम के समान मन्यन मुक्तने माने हिन्मति मानी की (उम्मीन) स्माम मूरे । (मार्थभनीती) जो पुरुष जारक्त से अमिन रमक्ति पहरता

... ... A Pries Takel Ba

है पह (मामामामा) प्रवासक्ष्मी बार्यान मानिषित्त, भीर मानिष्यां मुख्यों का मानि होता है। (फोप) कामचोर्जों में (पिया) मार्गक अगि (भिष्यः) वर्षां का बद्यम (बरीग) करमे हैं। इस प्रकार (बिग्टलाला) वर्षां कि स्वाय में आधि वने कुष् प्राणी (पुणे) पार २

अगिषि: कामनोत्तों में मामक वन हुए भीय दिमा नार्षि महान प्रकार का पापानरण करने हैं भिक्ती नाम्पार मर्नपाम (मन्त्र) मर्जवाय को (हान) प्राप्त होंगे हैं ।। - ॥

मंत्राता हात है और आनीरक और मानीसक ब्राच्मों में युनियत होंगे नहोते हैं। अन्तर मुक्तिमान पृश्वी की विषयाधीनी में पाराता न

<u>۲</u>

वापि से हाससासन्त, हैना मंदीरित मणगई। जानी वानस्त मीतृमा, नेर्र पड्रह जायागी ॥ ३ ॥

वस्तियायः (म) यह विकास क्षेत्र क्षित्राव्यात्र) एक्ष्य कि दिव (हेन व्यति) त्रीवी को मार कर की (मंत्रीत) उने एक की कृ (माम्प्रेस क्षित्र के क्षित्र के क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र के क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र के क्षेत्र क्षेत्र के क्षेत्र क्षेत्र के क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र के क

(कानार गार गान ग्रामारी भीव का (माम बन) संग की न फाना चाहिए ॥ दे ॥

मिनियो - वहुन म समायक नेव चयन हारच बीदार्थ गर्प बातींपनींपाई जीवीं की किया करते हैं। ये खतानी इपर्ण ब्री

अ कामिया र सार बजक क्या क जिल ब्यासा मेर यहार हैं। अन्न विषेत्री पुरुषों को पेसा क्यापि स क्या पाछिए। तम्हा यहित्रती पर्माति महत्ता, यागंकदेनी म क्रंड् पायं।

यमां म मृनं म विभिन्न भीने, पिल्लिस्ट्रिदिया में मिक्सम्मद्रेती ॥ ४ ॥



भावायः ---वरगण्णी गुगज पुरुष व्यपनी हत्त्रियों को परा में रजता हुवा गुत्र नेयम का पाजन करता हे जार प्राप्त व्याप (१६) ी, कृसन प्रानिकों हे पथ हे किए ।थानमांग्यातमः) उनको पतिनाग अर्थात् आगिरिक धीर मानसिक कछ हेने हे जिए धीर (आमा-अन्त्रमाथः ः (मानः) निष्यम क्षे (स्वतः यह (मीन) पुराय (क्ष्णेयांना) क्षतेक न्त्रिक यात्रा होता है । (मे। यह (क्ष्यां) केतन कार्यात क्रमनी तो सेन्द्रा वयं मृत्या। को (प्रत्या) पूरा सक्तों का (व्यक्ति) प्रवस्त कर्ता कि। (ते) उनकी यह मुख्या (माण्याकाप) यणगणिनं यन् यमं प्रामं, मं क्यमं यावहः पृष्ट्ताप, मे व्याणवहाप् व्याणपियाताप् व्याणपिरमाहाप् स मक नहता हुया कता जी प्रसाट नक हतना है। यह पुरुष सुम्युक्तान तक पूर्वीक गुणी का पालन करता रक्ष्या है मीर मृत्युक्ताला । थाहिए। विकास को कि मस्य वयन्त सत्तम का पालन करने की क्या जायदयकता है िसे क्रमका मनाथान यह है कि जीय के मार्थ जहत्याथः अध्यवभाष वहमार्के किए प्रवासियो अस्त्यासा सम्य याती संयम में (अह) दीरता (इनहा) रुपो (ज्यापण) चान पर पर परिस्थासम्म स सरता है । यात विवेदी पुरुष को पूर्वीक गुणी में गुज होकर सरण प्रवेत्त मंत्रम का पालन करता रस सवस संस्थात (सह संस्थान प्रत्यासम्बन्धाः समस्य (सम्) पाप (क्या) कर्मों के। (क्षेत्र) चाप कर क्रेस है। १९९॥ हतानका का का है। है। के की जानका के कहा के होता क्यांच नहीं है। जना महाम प्रदेश संवयपातन की आवश्यकता है । क्षाय्यः :-- मण्या संचारका स्वतः काला वृद्धय समस्य कृषा का प्रथ कर देता है।। मन्त्रांटम पिरं कुन्तरा, मन्यावरण महायी मन्त्रं पातं स्तांमंह ॥ ११९ ॥ जमान्यवहाण जमान्यपरियानाण जमान्यप्रियाहाण् ॥ ११३ ॥







मागीन एगे हह मामवाजी, जमरस नीर्न गमाऽऽपिस्से ॥ १ ॥ ज्यवेका मुध्यि म सर्वति एमे, क्षिप्रम नीपे कि बाडडमिरिस्ते ।

And the street of the street o

अन्यमाथः---। ततः कोहे समानी (१५०४०) मीर होता मानी मान के साथ (१६४०) बीकी पूर्वे मान को (म गरीन) मान नहीं कामे ११ (माम हम नीम की (भा कथा कथा अवस्थापे (भीव नीम चुक्के क्षेत्रा) और (क्षि) कथा २ (वालीममं) भीमेगी १ (१८)

इस रामा १, १०० (दिन्तेष (मामामामा) मन्तर मामा मामार यहते हे कि (जान) इस जीन है। (जी जो क्रीमन, पुरुताम

मसम्बन्धः का मान्या मन्त्रा स्था क्षाका निष्या है मुख्योर अधिनमन का विकास नहीं कामे । वे यह नहीं राजन है। का का मान्य ने जीर बड़ों अन्यों मध्य हमारी क्या क्या होने बाकी हैं ? ऐसा विचार में नहीं कांगे हैं इग्रीबय मे असम् वरत सहत १० कित्तक आधानत ना ना वहत है कि अह अस्त पूर्व अव में जी, पृष्टम, नव्नेमक जादि भेषी में तीमा भेष पाता क्रीम नायुन्तक न्या च्या (माम प्रायम क्षा न्या मान क्षा (मामामा) आयो के भवी में भी भाग होगा ॥ ? ॥

मार्टमाष्ट्रं म म खाममिन्मं, यन्ने मिष्टत्रेति नहाम्पा उ।

थ्या यत् अत्यामी बाम्म सी नेमा है। हिस्सा है

विह्मकापं एमामुक्ती, मिल्मीमह्मा सुवृष् नवस्ती ॥ २ ॥ ११७ ॥

्राम करा काम का क्षा करन के किय नथान पत्रा हुआ त्यामी-महेगी) तार्क्यी आहिंदे माशु भी (व्याष्ट्राणी) स्वी मांग का अनु-अन्यवायः अस्यवायः अस्यवायः त्रावान व्यवायः तां पहर मान्यार तं नहीं बाने तेसे सिक्ष सवपाय् (क) न तो (ब्रंबे) कारीय पान व सुल काल अस्य क्षा करवा संस्का हे को व्यवस्थान । (क्षाणंगा) न व्यवसाती. काल से सुन्त की इच्छा करने हें (४) ह्यी प्रकार



मे वंता क्रोहं य मार्ग य मार्य य लोगं य, एयं पामगस्म दंमगां, उयर्यमत्यस्म पित्यंतक्तरस्त, आयार्गं मगडन्मि।

अन्ययायः — जो पुरुष शारगेक्र भिनि से संयव का अमुखान करना है (है) यह (नोड़) क्रींच (मण्डे) मान (मार्थ) माया ाय) ब्यार (लाप, लांग को (लाप) ग्रीम दी नए कर हेता है कर यह (रंगल) उपरेग्र (क्वान्यक्यण) ग्राम में नियुत्त ब्यार (बिलंगमत्ता) क्रमं पम सन्दार का क्रान क्रान वाले (मामामा मर्यक्ष नीयंक्षों का है । बामान) ब्राह्मन वर्षाम क्षिमा व्यापि बाझनी का स्थाम

मात्रायः भाष्यपासन्यातानानि मंहत हो इन मन्यम का पालन काना है वह क्षेत्र मान मात्रा नीम का घत करते एगे गार को का जर रक मोन को बाब हो जाता है ' मेबा छवलहान केषलद्रीन के पारक नीबैकर समवाज श्री महागीर स्पासी ने ने गर्ग जागाह में मध्ये जागाह, जे मध्ये जागाह में एमें जागाइ ॥ १२२ ॥ प्रमा याला प्रता (मार १) अपने कृमी का नाम फर नेता है ॥ १-१ ॥

अन्यगायः --ा है। (१ १ परमाण् जाति द्रव्यों में में किसी एक को (ताणाः) जानवा है (व) वष (मर्व) नंसार के

्मगम्न पराणी हो (बाला) बानना 🗎 ाक्षेत्र जो (बाब) मंत्रार के ममस्त पराणी है। (बाला) जानता है (वे) यह (ह्वी) एक पराणी

-, 7.

मारि विश्वित नमें करता है। जनमें इस शोक भीत पात्रीक दीनों में ही अन हीता है। जो पुरुष चाने कन्याण में मधा माथान मावायाः — ता पुरण गणाड करणा है गर्जा चारणोद्धार के मार्ग में छोड़ कर चपत्रति के मार्ग में जाता तुष्पा गणात

मामाधिक वर्गाणणे को कार्याधिक का सार्वामक को ज्ञान कायक होता है त्यका मूल करान पत्र कीर पुत्र च्यादि में मामपूरिक मानात है को गाम मान मान मान मान का नाम का नाम है। यम विषेत्री पुरुष दुसका मान करने पारित्र का प्यत्यान हरते हैं। उत्तर साम्या सार्वास साम्यास का स्थान का स्थान का मान्या स्थान का का स्थान का स्थान का स्थान की बाद करते हैं रहता है उगरे। संसार से चमता बत्ती से भव नहीं होतर है क्योंकि समस्य चनवीं के मुल्ल्यून क्ष्यांव का क्ष्र क्षिताश कर चुका है। Il de cep atte ente e e ce e e esta que ente e ente

ग्रनगायः । अगव अर्मा १ न नमा हमा पृथ्व (मः) वक्त ग्रनन्तानुष्यनी क्ष्याय का (रिभेग्यमे) अत्र करता बृग्ना (मो) मुखरा का की नामा भाग करता है और त्या मुखरी का (विभिन्नायी) अग्र करता बुद्धा पुरंप (मात्र असन्तातु क्रिपी को णगं विवित्रमानं को विक्तित. को विक्रियमाने वर्ष विवित्त, मद्दी जालाए मेहारी मौगं च यामाए प्रिक् मियान्या अक्रयोग्या अधिय मध्य परण पर, नित्य अमन्यं परंण पर्व ॥ १२५॥

्री नंग कर लोक का (चल क सर्वत सरमान के करमाने कुछ ज्यानम के स्परेत के (स्टीन्टीक्स) जान कर (बर्बीका) किसी भी में अनुनार कानाम करने माला (वरान मित्रमान मुनि ही तायक ग्रेमी के भीम कीमा है। मीर मह (भी मुं कान के क्षण करणा है । अट्टे साझारात ३ खाराया में अन्ता मात्रा तथा (यानुत) तीर्यक्र मगमाच् के क्रमारे पूर्ण यामा

मानी को नम अर्थन के का मान मान है। है। है मान में भी मीड़म (बिम्) होता है पृश्म (बम्प) प्रमुख्य मानी मेराम में (हैं)

थरा र पर परा हुआ । १०४ र नत्मानुबन्धं स्रोप का स्त्र करता हुआ हुनरे भी दर्शनमोह प्राहिका े 💌 भारत प्रस्तित है। हे शक्त हो प्रकार को है। एक इडव होत्र की रहमरी भार राखा। इडव होत्य प्रक ाटा ६ समास्ताना मात्रापाचा सर नदी होता। सरम सम्प्राणियों को जनगरने वाला है। यह ं नार रारा अथवा र ला घाषाता सवम मायद्व कर दूसरा मयम नहीं है क्यों कि अममे अपर कोई ार अस्थान क्षा ता है क्यांक नवस्था. बुरुष कृत्यी व्यादि सस्तत प्राणियों स सम्भाव इतता है। त शादणी म मायदर्गा, जे मायदंगी में मायादंगी, जे मायादंगी में लोमदंगी जे लोमदंगी से (फलदंगी, वे फिजरमी म रामदमी, ज दामदमी में माहरमी, जे मोहदेंसी में गण्मदेंसी, जे गण्मदेंसी में जम्मदेंसी, जे जम्मदेंसी से मारदेती, ते मारदेती ते कायदर्ग, त कायदंती में विरिष्टंनी, ते तिरिष्ट्ंनी में दुस्यदंती। से मेहाबी श्रामिखिय-हिंजा सोड प शातं व शायं च तीप्रंप दिन्तं च दोमंच मोहें प गत्मं प बसमंच मारं च खायं च तिसिंग च दुनखं प । एष पामास्त दंसंत उत्तमस्थाम पित्तंत्रस्स, मायाणं खितिद्वा सगद्राम, किमरिष श्रोवाही पासगस्स ? नरा १ १ १ १ १ १ वा एथ नराहत्म को क्सी सभी भागनिहित्ता है। म पिता है. मिरिय ॥ १०५ ॥ दिन केट .. न विम्हित



```
सावायों — मनोडा (वरवों) में गांग कीर अपनेता में हुंच बरना की जीववाय बरहाती है। इस लोकेवाय के द्वारा जीव मीदित
हो यह है कीर हती के दीन को कर माने किया जाना जबने के कारी के कुल की दिन्दी किया की नीवायी पुत्र में इस लोकेवाय जो सावास्त्र का वात्र का माने का का का का का कर स्थाम दिन्दी है वस्त्री सावत की वे को भी स्वीकृति होते हैं।
                                                                                               भावायों - सम्यत दर्शन को प्राप्त करके उनके अनुष्टाल कारण न करना उस सन्वमृत्यों की विष्याना है बन्धा विषेधी पुरप
सना कर नया मिन्यान्त्रियों क सनमें से उसका स्थाप भी न करें। वस्तु के ययाये व्यव्य की जान कर मनोज्ञ कोर धमनोड़ ग्रापार्थि
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       धन्ययार्थः (अम्म, जिम मोक्षार्थी पुरुष की (अम) यह पूर्वाक्र लोहेयला (जाई) ज्ञाति-पुष्टि (जाल) नहीं है (तरन) उसकी
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       (बला) दुवर्ग सावदा आरम में मचुनि (बआ) कैसे नंमग) हो सकती है ? (१५) यह (व) जे। (गरिडरियम) मेरे द्वारा कदा का
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               किया गया है खार (तिमान मिया कर में जाना गया है। (तिमाना) जा पुरय मनुष्य चादि अन्मों में चत्परत चासक हैं बीर
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               एलनामा) मनोक्ष इन्द्रियमुख में नन्नीन हो रहे हैं थे (पुणी पुणे) बारवार (जाई) प्रकेश्चिय घादि आति को (परुणति) प्राप्त
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        रहा है वह (१३३) सर्वन्न के द्वारा देखा तया है चौर (१४०) अवशायियों डारा सुना गया है तथा (४४) अव्य जीयों द्वारा मनन
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    उस्म ज़ान्य इमा खाँई, अएखा नम्म क्यों निया ? दिई सुर्य मयं विएखायं जं एयं परिकाहिज्ज्रह्, ममेमाखा
से Honge negran विरक्त हो जाय । (सीमधिन्त) लोकंपणा (को नो) न करे।। १००।।
                                                                                                                                                                                                                                                                                               चिष्यां स माहेष न करे किन्तु समस्त पराथीं में समभाष रत्ते।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     प्लमाया पृष्णं पुर्मा आहे पक्ष्पंति ॥ १२८ ॥
```



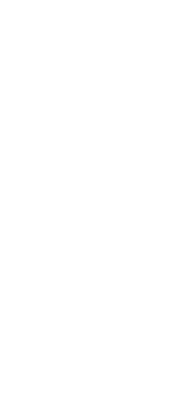














(मालासिक्ते) चारेष वानी प्रदृष्ण करने योग्य बचन यासा (बिलारिए) कहा गया है सीर (ते) जो (बंगनेरीत) प्रदायपै में (बीसा)

भविषि:---जन थान्य नथा कनन्नादि छे पूर्व मंथीग को एव असंयम को त्याग कर भीर मंयम को स्वीकार करके नवशीक्षित से सबम की हटा का कमी का विनाश करने म समध बीर यन और जीयन पर्यन्त शुद्ध संबम के पालन में रत रहे तथा ब्रद्धाव में मृति पहले तपस्या द्वारा रारीर को मोड़ा पीड़िन करे, फिर विशेष पीड़िन करे थीर खितिस समय में रारीर को स्थागने की इच्छा करता हुमा साषु मासद्वरण बोर घट्टनामहत्त्व चारि क द्वारा शरीर को निन्नच हो पीदिन करे। घोसारिक भोग विकासो से तथा चरति षिजंदि पश्चिन्छएणेडि आयाखमायगदिए याने, थव्योन्छिएण्यंषये अपामिक्दंतसंबोए तमंति अविषाण्यो े नियास करता हुमा (अमुख्र) शरीर की (मुण्यह) हारा कर डालता है, यह पुरुष प्राद्ध घवन याता होता है ।। १३७॥ सम्यक निवास करता हुआ तवस्त्री मूनि खवने शरार और कसी को कुश करे।। ब्राण्याए संमी यन्थि नि मैमि ॥ १३८ ॥ मन्याथः — (बाल सम्रानी आंव (मना ६) नेत्र चार्वि इन्द्रियों को (बांबियवाये है) अपने स्वप्यों से रोक्ष कर भी

(कास्तराजेकारात) फिर विषयमात में आवक्र हो जाता है। क्योंडिकाल्ड गेरी यह कमेंबग्यत का छेदन नहीं कर सकता है तथा (अप्योत्पन्टनतंश) स्वांगों का उत्तवस्य भी नहीं कर स्तक्ता है ((जिप्ति) मीह क्यी क्यांकार में पढ़े कुप चीर (विशेषाणी) करवाण के मार्ग को न जानन वाले उत्त पुरुष को (बालाए) नीपंक्त भाग्याल की पाजा का (बंगे) लाग (जीन) नहीं होता है (निधेष) वह भू में क्यांका है। (इस्स्त है। (इस्स्त के प्रतिक को प्राप्त की पाजा का (बंगे) लाग (जीन) नहीं होता है (निधेष) वह



المارات المراسان على المراسان على الراسان على المارات على الماسان عاملا المواد على المساوح المواد المارات الم علقا عن يعلق الماري المناورون عليا عليا علي على ويا عليه (جور) عليه على الساعة والمساورة عليه المساورة المساورة the first are the contract to the same (many the first day that the track that the first the first the CONTROL OF THE WORLD NOT THE WAS BOUNDED BY THE WAS BUT THE WORLD BY T THE RESERVE OF A PARTY OF BUILDING AND ADMINISTRATION OF A PARTY AND A PARTY OF A PARTY 的复数多种 医中央管理 医中央外外 医多种毒素 经有限的通知 经有限的 医二氏病 经有限的 医有性性 医二氏虫 医二氏虫 医二氏虫 医二氏虫虫 医二氏虫虫 । दीन चीये अन्यत्म का चीया होजाक त्यात्र ।। 大小 職員品をおおし 、 あまるまちょう



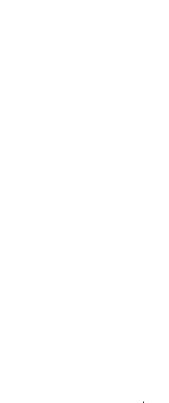


المعاول المعاول المعاولة والمعاولة و A THE CHAIN STATE OF STATE OF COMMISSION STATE OF STATE STATE OF S THE WIND THE COURSE WE WANTED AND AND AND SHE SHAPE SHAPE SHAPE SHE SHE WE WAS A THE THE TO SHE WAS A SHAPE SHE WAS A SHAPE SHE WAS A SHAPE SHAP المتاكلات الما عد عالم المعال في المعالمة والماريسونية المراسونية الماريد الما ा हमने (सम्पन्न) मुनेका है (ह जिस्मान है निका) ग्रांत कुन (नाम) कामग्रीको छै हो। में मा मनक मन को को मने कर The whole with the the track the track to the track to the track of the track to th علاقة عد عد الله المدار المدار عداد الله المدار الما المدار المدا म म का महमा . मानाम मामहमाम माम मुद्र असम मार्थिमान्ता, पहूर नात बाल्य ! कामही है मानुसार فاعتداء معدانا معفيا مدماه فعيا طغياء فعنع فغناعها المتناهمي كرمكادتكم كالمناكم والمتاهام المعملي المقادة والقراء الماءا المادات المادات والقائد المناوة المعادوة الكندوية فللتيورة فالمتركزي منسلوبه المقاد il dad lajo o, elétettime ease, a untrefiett une cie ** ** * * * * * * *

A war a control of the first transfer and the state of th















है | हाने पर भी वहिताहिका ज्ञान न हाना उस बाद कर करते कर कर कर के कियात भी से जाव नो चनवा है कियू मायू निषयनेतन ाथा है। हैं हैं का का का का का का स्थायान संघानिक होने से जुल्का पहले तो (रत) रूटड बास होता है चीर (ल्ला) पीड़े (बजा) नर-मायापी — हमों हे विपाद को देवने वासा, संकार के यथाये श्वरूप को जानने थाला, उपराशन, मनिति गुफ, हानादि छुण अदित और ए. काण जीकों का रक्षक मुनि योग ही क्यों का व्यन्त कर देवा है, पेने मुनि एर यदि को प्यापि के परीयह व्यापे तो भी यह बप्तेन संयम से विप्तितत न होने किन्तु संयम में एकु रहे । इस प्रकार संयम में विषय्ण करते हुप साधु की शुन्नुगाँ पदि उसे बर्शंद की पोड़ार्ग सामनी पड़ती हैं अपया (९००) पहले जाना क्वी स्पर्ध होता है चीर (लच्छा) पीड़े (दंश) स्वड भोगना पड़ता है १९२१ दर प्रवार ये न्या सरवन्य (बन्दानमारा) कलह के कारण प्रायश रागद्वेय को बढ़ाने वाले (भवंते) होते हैं। प्रतः न्मर ंग्या गणकाय का पुत्रोक्र सानयों का कारण समझ कर यथ (बागतिमा) असन कर (ब्यणक्षेत्रणपे) सेधन न करते की (बाण-** काशा र कार्य म संवत्र त करे !* बंगा यह में खदतरा हैं। (ते) यह सम्यु (छो कीए) क्यों कथा न कहे (छो पानछिए) राग-पूरं कर का प्रकार का म क्ला कि का माल का माल का माल कर है (यो क्षांधिर) उनकी पैयायक न करे (बरात) बचन स गा र न नधान स्वयो के नाय विशेष प्राक्षायसंकाय न करे (काम्प्यवेषे) स्त्रीमीधों में चिष्य न दे। (बण) सदा (बने) पाप को धी हेव करें तो साथु निस्तार एक व्यन्ध्यान्त भाइतर करे। इससे भी यदि सान्तिंन सही तो व्यात्तपना व्यादि लेकर रारीर की कड़ दे। भं सम्मा पश्चित करे (एव) इत प्रकार (सीच) मुनियत का (मायुर्वाधित्रवाधि) पालम करे (मि भीन) ऐसा में कहता है।। १४६॥















40 (१९) स्व पुररो था (थ- थे तीरंकुर या पण्यर शाहि (प्रीमाश) मुहिनाएं या (थित) प्रपरेण करते हैं। (एर्) एस प्रशास तीरंकुर भी करते हैं। (स्थियाः) स्वस हैं कर पाने पूर (पण्यर) मात्रक्याण थी कृति से स्वित (श्ली किसी प्रयोग पर प्राप्तम प्रतास के स्वयस्त के प्राप्त मात्र से क्रेय पाने हैं (थे उसे दिसे) में बताता हैं। (या शि जैसे (एक्सप्ताली) क्राय के वसी से देवे पूर (स्था सावास में शिव्य क्षेत्र पाने सिंग के काराण प्रशास (क्षी क्षी क्षी क्षी क्षा के वसी से देवे पूर (स्था सावास में शिव्य क्षी क्षी के काराण प्रशास (क्षी क्षी क्षी क्षी क्षी क्षी के सिंग से देवे पूर (बंदी सावास में स्था क्षी करता है स्था प्राप्त हैं। (या शि जो क्षी विक्य) कराय के तिन् हैं। तिन की (देव मा) मात्र की क्षा करता है स्था (ची क्षी क्षी क्षी क्षी क्षी के हिस् को (स्मान) थे (मामा) एकेन्द्रिय बादि मामियां (सममी) मन प्रदार से (जारिलेहिनामी) बच्छी तरह हात (मनति) होती हैं (ते) मन्यपायः -- (प्रकृतामण्) स्वरं मीर मोश नया उनके कारणे को प्वं संसार चीर उसके कारणे को जानने याता वर (बर्धाल्स) बानुवम (लाए) झान वर्ष भर्म का (माम्ब) कथन करता है। (ममुद्रेशाण) धर्माचरणु करने के छिष् सत्त्वर (शिमेश्यत-े (मै) वह (लो) सनुष्य १६ हरत मनुष्य होस में (मालोइ) मनुष्यों के प्रति (बाचार) घमें का उपरेद्य करता है। (जान) जिस्न मनुष्य र नामः माति वो को इत्य देने का स्वाग किये हुद (समीराण) तव बीर संयम में प्रमुख भीर (राण्यावर्ताण) उश्वम बान सरम्य मालम ०ए रोगा, धक्खाया ब्यापुरुवसी । बह यां फुमंति ब्यायंका, फ्रीमा प ब्यामंत्रमा ॥ मरथं निम मंपेदाव उदधायं चवर्षां य खब्चा परियागं य संवेदाय् ॥ १७२--१७६ ॥

340 E 823 6 ात नहीं करते हैं। (बह) चन (गेंडे) उन (क्नेंडे) कृतों में (बारवाए) खपने कृतों का क्रब भाग के लिए (जात) उत्पन्न हुए पुरुषां | 12 | नागपः नामकुन्नामन नामान्य कवली अभवा इमने अधिशय याती या अतकेपती धर्मीपरेश गेरे हैं। यगपि थे जात कर नणा (वीरवा) कमो के परिणाम को (बोहत) मेख कर ऐसा कांग्रे करना चातिष्य जिससे पूर्वीक रीगों का स्थान श्रीर ्यतमा वानी स्रव नोग वाने और व्यवसार्थ) कोई स्रवस्तार वानी मुनी रोग युक्त होते हैं। (काणिय) कोई काणा (तहा) जीर नोता है। (नर्ग) कोई यात स्वाधि के कारण षमा वेश याला (प्रं) कोई मूक-मूंगा (प्रतीर) कोई शोषयुक्त दारीर याला (र) जीर (দিনাদামি) कोंक्रे सस्तफ नाम से युक्त होमा है। (দিন। कोंक्रे फस्प युक्त अरीर पाला (গালদীয়) कोंक्रे पीठलिय यानी पीठ के यहा रेंग े छे (सामका) कानकु और (समानिमा) जीयन को शीम नए करने याले गुल सादि रोग (य) और (कामा) कूसरे दुस्त (कृमंति) मासिपो को उत्पन्न होने हैं। (नांग) उनके (मन्म) मरण को (मोहाए। देख कर (य) और (मनाएं) उत्पत्ति (य) तथा (नरणं) व्ययन को (मत्त्या) रे । को (नान) रेगो। (नश) कोई गगदी व्यर्गात गगटमाला के रोग से युक्त है (बरता) जीर (कोग) कोई कोडी दें (रानती) कोई राज-कर चलने पाला पर्य हाग्य में लक्ष्यों वक्ष्य कर चलने याला (मिलिक्ष) कोई घ्लीपद नीम से युक्त (य) और (महोग्रहिंग) कीई मधु-ं स्रोह रोग से युक्त होता है। (' ए ' घं (गोलग) स्रोतह (गेला) रोण (अगुएलगी) फनछा (अस्ताया) कहे मचे छे (गान) इन्हें पृत्यो। (अह) (।स्टीन हो हं जा क्षान को हं सम्मन्दा याती यक पाथ कदा कुत्रा और यक्षी र कदा कुता (नेप) कीर (न्यान) की हं फ़पका 🛭 मालक हुद (न्युज मजात) करना नदन करन ए क्ष्मंतु १५५ प्रत्या १५५ मा मुम्मी का आत्मत न ब्रोना गए ॥ १६५ १६६ ॥











































\$ \$ \$ \$ \$ भारतात्रक राहम पुरव (१४०) म्या ही (१९४१) करता है। (वे) जो (भिम्स्) साञ्च (सिएटश्विक्तम्स) कर्मी हैं स्वक्ष्य के कमान बात साम्य के बात में स्वरुक्त नियुक्त हैं (के) यह (काव्यदी) प्रयस्तर को जानने यासा (काव्यो) यह को जानन साना ' " मना धाना समिता है बानने याला (काव्ये) एक को जानने याला (काव्यक्ते) विनय को जानने याला वाका अंतर प्रतिकार शहत वानी किसी भी ग्रहार हे निवाले से शहत (क्रमी) बाह्म चीर आध्यन्तर दीनों ग्रहार के बन्धनों भीविधि: -- वस्तु ६ . थाय स्वह्म को जातन वाला राग्रहेव रहित पुरुष सब ध्वक्ष्याओं में प्राध्यियों पर व्या ही करता है। का अल परमाण एए विमय की समय याता चातम की जातने बाला बह पुरुष किसी भी पश्चार्ष पर ममत्य भाष न रक्षता " अमर को मानन वाका है वह । १८४० प्रियह पर (मनमानाने। ममरथ म करता हुन्या (कानेन) काम से (ब्राई) उठने वे भिग्दे मीयरासपीरवमायताथ उत्तर्भिया गाइताई पूरा-याठांठी समया ! यो छन्न ने गामग्रमा उप्ताहोते ! याउमते गाहराई ! यो छन्न समामग्रमा उप्ताहीक, सीयकास य बो छन्न मनाराम महिसासि-माण रच रथा, अ मरिणकाजनन्यम कंपरांचे से भिष्मकु कात्रायंचे परवायों मायाये खवयचे विचाययों समययचे वारमार समामाणमाण कान्य उद्दार्व परवांच्यं दुष्मां क्षिया विचाह ॥ २०६ ॥ की। प्राधिष्य करही , ज्या सबस्म माथ मामन करता है। १०६॥ दुष्पा भवम माग म मलीमाति विषयता है।

णप, यो तुसु थे कपा माधिकापं उन्नातिषय् वा वत्रमासिषय् था कार्य भाषाविषय् या वदाविषय् वा भवशिष

या गयमात्रो, मिया मे एवं वर्गतस्म परे व्यामिक्षायं उज्जालिया पञ्जालिया कार्यं व्यायापिङ्ज वा प्रपावरण पर

म मिक्स प्रिनेहाए आमिडिजा यमामिक्षाए निर्मिम ॥ २०७ ॥

न्नातः । या। । यापरः। वाषरावः। वाषयवं यानी विषय तो (वो ज्यादि) पीषित्वनदी कर रहे हैं । तो साधु उत्तर हेंये कि (बाट अन्याप्तः - (मान्तः) रामसामाम् जीत्र भाषाम् यानी उनक्षेत्रमारे जिसका श्रीर कांगरष्टा क्षेत्रे (से उस कर महरद ह अयुक्तम माजापति ' (वत्) निख्यम ही (मा) मुक्ते (माणमा) विषय (मो क्वाहिते) पीष्ट्रित नहीं फर रहे हें किन्तु (१०१०) साम् में र सामाल्या पास कात्तर (साहतह) यदि कोई भाषापति (वृष्) इस प्रकार पूछे कि (बाडमंती समा।) हे आयुप्तस्

मांग्रहाय का १८ में ११ मिश्रिय जनाता (११) घथवा (प्रयाजन) विशेष क्य से प्रवस्तित करता (म) भीर (कार्य) स्रवने रारीर (बरा विकास के एक) क (बरास्ता) दी रस्पर्यं को (बाह्यांमाण्यः सहन करने के लिए (को संमाणि) समये नहीं है। (ब्याणिकार्य)

कि अन नाव है (ग) या (मममन) विशेष क्व में नाव दें से (मिम्प्) साघु (बं) उस यात को (बिरेशेशप) विचार कर (बं) बीर (याम-का कांग्रकाम जागा (मामासाम) किथ्यित त्राम हेना (या) खयवा (प्यातिमार) विशेष क्रम में ताप देना (या) तथा (मामोनि) दूसरों के कत्माता हु मामणा आयह (मा नाइ (मा) क्रान्य पुराम (मां) उपरोक्त महार से (क्यंतस्म) काहते हुप साधु के सिष्ट (बामीराहाने) प्राप्तिक ाणा) ज्ञान कर (यणांराणाः) उसे मेयन न करने के लिय (याणीया) उसे आखा ने ऋषींच् उससे यह कहे कि इस प्रकार अप्ति-वाव को 🗁 मानमा) फिन्छिन जना कर (म) व्यववा (न्यानिमा) विदेश्य करा से जना कर (घर्ग) सापु के ग्ररीर को (वार्गापिक)

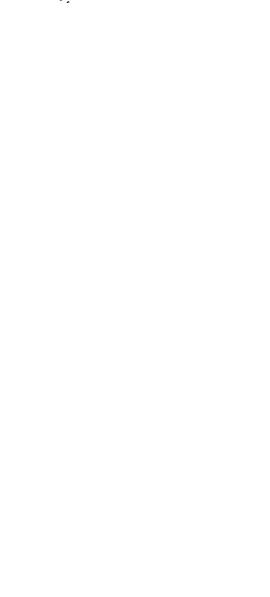
गर पहें कि है मुंते ! वापका तरीर ब्लो कार रहा है ! ब्ला कांच्यो पियर तो नती तता रहा है ? तो मुत्ते चन मृतक को सब जनर दें कि हैरियानिया पूर्व पिता को तता पहां हैं हिन्दी करत से मेरा मिरिय किया है। मुत्ति के तत बन्धों को मुत्र बर पो वह मूख्य पांचे करा बस्त मानु के साथ को तता देता पांहें तो मुने तत्त्र के दें कि है कांच्यों कि में म्या किया करता को र सके होरा सीर यो ताय देता मुक्त तति बन्दात है की करता हमारों ने यो प्रवास कांचान में मुक्त की व्यक्त के व्यक्तिय करा को स्वास्तिय करता की व्यक्तिय करता है को किया कांचित करता है को किया के कांचित करता है को किया की कांचित करता है को किया करता है को क्षा के कांचित करता है को किया की कांचित करता है को किया करता की को कांचित करता है को किया की कांचित करता की को किया की कांचित करता है को किया की कांचित करता है को किया करता है को किया की कांचित करता है को किया की किया करता है को किया करता है को किया की की किया की की किया की की किया की की किया की किया की किया की किया की किया की किया की की किया की किया की किया की किया की किया की किया की की किया की किया की किया की की किया की क भारापी -- शीतकाल में नवीं के कारण वारि किसी मुनि का शारि कांव रहा ही तो उसे देख कर बारि कोई गुद्धय मुनि से ॥ इति आठ्ये अत्ययन का तृतीय उद्शक समार ॥

٠ ٠ ٠

' गाय का मेयन करना मुक्ते मही कत्यता है (नियमि) ऐसा में कहता हूँ ॥ २०७॥

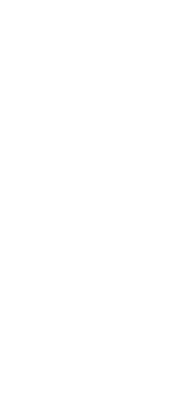
بر الحرار











38 ग्रे हुन नग्न को न्वान है की नग्न रहिन होत्का गई। इस प्रकार यह व्ययंने चापकी तानु-इन्का प्रमाता हुआ मममाय की पारण करे। गरनगर्गः 💍 🖚 🕝 दिस्स 'उत्तरमा सात्र् को (न्त्) नेना निनार (भाष) होता है कि (यह) मैं (ग्री) धरेना (यींग) हैं। े हे नगर। नुसर नम्न की छानका करता नहीं कटनमा है। जब शीत मृतु हमतीत हो जाय त्रीर मीरम मृतु क्या जाय त्रम गृह अपने उस ा गर कर का हा । वारी किया है . जीर (बहम्का में भी मा कर्तात) किसी का बहीं हैं। (एवं) इस प्रकार (में) यह (बनायो चनने को न्नान मानेता है। मह नक्षानक जाने । (क्षानेत) प्राने बावको तम् यानी प्रत्या (प्राप्तमाते) यनात्रा दुष्ता (गे) गर गमा मात कि मना मात में का कामों में जब की (बांमामामान) प्राप्ति (अम्) क्रोमी है। (जा) वावत् (मानिजानिया) सम-ं ं ं ं ं ं न ता का हा का का यन भाग है। ऐसा जान का मानु मुख खीर दुःच श्रीनों में समधाय रखता हुता थीतराम की रियापः नामान्त्रम् प्रमानमान्त्रम् एतं मिन्ना मान्त्रम् । मिन्नम् मिन्नम् मिन्नम् मिन्नम् अन्ता हुषा मै जनापि काल तसा मं पितम्प्म एतं नतः तमं यहमीत, म मे यन्ति कीइ, म पाइपित कस्तवि, एवं से एसासिलानेव अप्पार्ष म सम्म मा निम्मुणी पा जनले वा पालं या ब्ताइपं वा बाइमं या ब्राइरियाणे गी बामाओ हणुयाओ दाहिणं हग्य गंचारिज्ञा व्यामाण्याण, दाक्षिणात्रो वा हणुनात्रो वामं हणुयं गो संचारिज्ञा व्यासाएमाणे, से खनातायमाणे गर्गाव ज्ञातिक आ नामान व में अभिम्मानाम् मन् जान सम्मिनामिया ॥ २१६ ॥

वन्य जारज्ञा खारारारानाहरा वस्यं पारित्जा जाव राम्हं पांडवरायो अहामीखुरायं वस्यं परिह्रविष्ण्जा, परिहृतिता खहुवा वे भिम्म एतेष वश्येष परित्रीमए पार्यावहैएया, तस्स थे थो पवं मझ विह्ये वस्यं वाहस्तामि, से श्रहेसचिन्नं प नव (साव म सम्प्रतास नास का कथत किया गदा है। इस छ ठे वह सक में द्वीगत-सरख का कथन किया जाता है:--आठव अध्ययन का बठा उद्योक

å

क्षन्याथः---(अ) जो (मम्म) साथु (मेरा यक ,क्षेत्र) यख चीर (ययर्कात्व) दूसरा पात्र राजे साथ (विज्ञान) रहता ि (समारा) उसको । ५) ऐसा विदार मो अपः। नहीं दोना है कि में (बिर) दूसरे (बर्प) यक्त की (कारणि) पायना कर्दगा। भचेले लापवियं यागममाथे जाव सम्मचमेव सममिजाषिया ॥ २१५ ॥

क्षे गर (कालानक) प्रमुण के घ्युमार (क्या यक्ष की (बाह्म) याचना करे चीर (वहार्गाणकि क्ष्मे) जैसा यक्ष प्रहुण किया गया थतु (संस्था) साताई है तब यह (बातांरकुछ। तीचे (स्व) यकों को (बोध्धिक) त्यारा हेरे। (पत्रुष) भाषया (एतता) वषु कारशः पक यस्र पास (भःसा) नमा (भनेते) यस रहित होक्ट (भण्डेच) माने चाप को समु (याम्प्रमाते) पनासा दुमा (जान) यायन् टै मर्गेत् सत्र नता हे वेदा ही (शारता) पारण करे (बत) यावत् अय वह देखे कि धीन प्रति मतु चली गई है चीर (मिन्ह) मीच मीवार्षः—शिता माधु का यह नियम है कि—यक पत्र जीर यह पात्र को छात्रम करने बनने बनन कोन्न कर निर्मा (सम्मन्देव) स्राचकाय को (स्तानकाण्यि) घारण का ।। २१५ ॥





50 **5**1 + 🤅 लापत्रंय बालममांत, तर्व मे श्रिमममण्यागए भषद् । बहेयं मात्रया पर्वेह्यं तमेत्र श्रमित्तमिच्चा सब्बन्धो सब्बचाए मम्मसम्ब ममभिज्ञात्विया ॥ २१७ ॥

मन्त्रपाथ: --(व) मह (भाग) मात्रु (ग) व्ययम (मिनक्षी) झारदी (म्राणी) प्रमुन (पाणे) पानी (मास्) झादिन (मास्) स्थापंत्र स्थापराक्ष तह बाह बक्राद का बाहार करना द्वारा (पावाएको क्षाद होने के जिय प्राहार को (जनमो वृष्टे (ब्युयाको)

हतु यानी दाद स*ानगरना) द*क्तिण यानी दाहिती (रापुर) वृष्ट्र की घोर (को लेजाहिम) देखाहित म करे। तथा (मजाज़ाको) स्याद

लेन के तिय (नारणका) गांहनी (बनुधारों) पृत्य से (नाम वार्षे (बचुरे) ब्राङ्ग सी तदफ (को धंभारिका) सञ्चातिक म करे। इस मजार

ंते यह सापु (कानावनको) स्थार न सेता द्वादा महार नरे। (लायीक) यपने कर्मी को लघु (बागमप्त) घनाता द्वाद स लेका माहार को । जो वाधुक्याद न लेका माहार करता दि (वे) उसे (ते) सप की (यमिनमण्डाण भय) माति कोती के । (त) जो

(९४) यद (समक्ष) मगयान् ने (सोरः) सरमाया है (तोत) उसी को (सीम्बतिष) यघार्यज्ञान कर (जन्मो) सब मकार से म्रीर

(गनगए) सर्वाप्त भाव से (ममन्तेर) समयाय का ही (मनीमत्राधिता-धानेमाधित) पासन कदे ।। २१७ ॥

मातार्थः — मायुया साचनी व्याहार करने समय स्वाह लेते के लिय बाहार को वार्द धाद से दाहिनी या दुधी घोर तथा

दीदिनी राक्ष से बाई गाक्ष को जार जामारिकत करें किन्तु गुटिमाय रहिन होक्द माहार करें। इस प्रकार गुटिमाव रहिन माहार इस्ते से उसे का को प्राप्ति होतो है सीर क्यों का कृप टीकर कपुण्या मात्र होत्ता है। ऐसा साग्र समेत सकार ने समामाव रखान











310 30 (उड़ार) पण्डितमात से मिष उत्तन दोहर (ज्ञानमञ्ज) कांत्र से पाटे दी तरह निश्चल होकर (क्षेत्रिण्युष्य) श्रीर से सन्ताप से प्रयेग करते-जाक्त (तणा) सुखी दी (मारजा) पायना अरे (मत) यायत् सुधी दी यायना करके उन्हें (संबंदिना) निरितृतृके सन्यायी:-- (मान छः जिल (जिनमा) लागु के मन में (खंनमा) इल महार का विचार उत्तय होता है कि (ग्जु निशय ही (स्थाम) इस (ममरा नमय में (चर) में (स्व) इस (मधेता) मापने छतिर का (बणुपनेय) कमछः (मशिक्षिण्) निर्वात्त करने में (जित्रांक) ग्वानि को माग होता है। (वे) यह (प्पणुनेवेव) क्रमग्रा (बाहारी) याहार का (बंबरिज्या) स्वाप करने सचा (काप) क्रपायो को (१८००) पनता (१६९म। करहे (वन्नां१६९३) ग्रारीर के स्थापार को नियमित करे घषवा चपने विचारी को समाधिक्य करे। रित्म होने के रच्छा वासा (निम्म) नाजु (नन) मान (न) मथवा (तगर) नगर (जा) पायत् (रागराणि) राजधानी में (बध्यानिता) र्हास्य य वरणसराहज्जा, तं मरुनं मरुनाशाई थोए तिराणे दिरास्यक्दंग्हे प्राहमद्वे अपारिद चिरुनाणं मेउरं कायं सेविह-जिय विरुवस्य पीतहोत्रसम झस्मि विस्मंमणुष् भेरवमणुष्यिष्यं बत्यावि तस्स कालपरियाप, से वि बत्य वियंतिकार्ष, कृत्यं याहारं गंबड्डिजा, मंब्हुश्या क्रमाए पयगुए किञ्चा समाहिषञ्चे फलगाबयद्वी उद्घाप भिम्नतु मनिधियुड्ज्नी, अतुर्पतिममा गामे वा चयरं वा जाव रायहार्थि वा तजाई जाइज्जा जाव संवरिज्जा, इत्यवि समय कार्य य जोगं च मिलाये। (स्मीत) उस (मम्प) समय में (क्षते) मतीर (का और (लेत) कोक (का काक राज्या हु है - -इल्पंच विमोहागचर्ण हियं गुई समं गिस्सेमं ब्यागुमासियं लि पेमि ॥ २२३ ॥



ল০ লা षाद्य चीर काभ्यनतर परिष्रह की (विकाल) जान कर दर्व त्याग कर (बजुडनीए) जनुत्रम से संगम भी नित्राओं का पालन कर के चौर पाएथेरामन इन तोन माखों में से में फिन माखे के योग हैं, यह निक्षय करके जसी मरख द्वारा समाप्रियूर्णक सरीर खाग कर बारम से निशुण हो जाते हैं और स्वुक्तम से क्यों में दूट जाने हैं। धनियायी:---वद सागु (क्वाए) कवार्यो की (वन्युए) वतला (क्विवा) करके (बनाहार) बारूप बाहार करे। यदि कीहे कडोर भीयोपै!---बुद्धिमान सवमी पुरुष यथाक्षम से संयम की किवाची का पासन करके व्यन्तिम समय में भक्तुगीक्षा, क्षेतितमरख पणन कहे तो उन्हें (जिलका) सदन करे। (वह) यदि इस प्रकार करता हुष्या (निम्त) साधु (निमास्त्रा) प्राहार के निमानशानि भीवीयोः --- मक्तारिक्षा चादि त्रिधिष भरण में से किसी एक मरण को प्राप्त करने के लिए अपत्र क्रुचा साधु पहले क्यायो की सलेखना करे सथान करायों को वनला करे। कपायों को वनला करना हुवा साधु आहार थी मात्रा को भी पटाता जाय चीर कृत पोहा भीतन करें। पेसा करते हुए बांद खुशावरिया, बाधिक सताये तो भी माधु जाहार थी इच्छा न करे चर्चान यह नहते थे कि भी सोई दिन और साहार का थीं किर महासत्ता करता?''। 🕴 (संमए) वर्षाचोग्य प्रत्य का निश्चय कर के (मार्गाळी-ब्युक्काची) चारम्म से घष्या कर्मों से (तित्रह) हुट आने हें ॥ २ ॥ कताए पयशुष् किञ्चा, व्यपाद्दारे तितिकत्तुष् । ब्यद्द भिषम् गिलाइञ्जा, याद्दारस्तेष यंतियं ॥ ३ ॥ को प्राप्त हो तो भी (बाहारलेश) बाहार के (सतिश) पास भी म जाये सर्वाम् बाहार की इच्छा न करे।। ५।।

में नेटरे—दिस गाथा में "बाहारतंत्र ब्रोतिय" यह पर दिया है क्यित हाथं कामे कुझ मी किया पर मही दिया है। इस तिय | यात्र्य की हिंगे पदि ने सप्टेश किया का कापाहार किया अग्य नव से इस बाला कर की कर्य की का अ









• E E E े भे (उस्र कत्र व्यवस्तु संतक्षेत्र पाले सीष व्यक्ति (ग) नथा (व्येत्रस) सीचे याती जिन में रहने गाने नथांति प्राणी से । यदि वे मायाथी। चात्री, शृताल, सीच, तमं और सिंह स्याद्य आदि द्राणी यदि उस मातु का मसि भषुण करें जीर मन्द्रर जारि --- ने नाम दाम वापि के बारा उस प्राणियों का यान स करे और जिस जफ़ की में ता रहे ही उस बाह्न का राजि ्री । सम्मारमारी गर्मन और रप्न का गुर्ना) समून करें तो (तक्षी) सार्पु उन को न तो मादे और (गुगमण्य) न रजीक्षरण से प्रमाजित साजवारी!-- १। में संस्ताल विधि स्वतात मारि संसर्वत यानी सूमि वर ननने वाले (वापा) प्रामी है (व) कीर (३) गानता काथ गाममूनी की हत्या तर तो जन्म। जन्ती मिथे मोडे मूरीमत्र प्रमानी मान जी ती नाम प्रमे मामभाग पूर्वक मान करे चीर गृह कासानी के गृत्र क्रिका क्रिके महास्तान पूर्वेक सहन क्रिका नाता (सामूनेक) मनुष्य महत्रात्ती जनुकून प्रतिक्ष माराधीः--वर तम् कम्मे मन्त्र अनुसार मिनिय या समूबिय साहार का नाम करने नथा समन् प्राणियों थे समा स्वस्तापी----(बल्यानी) बाहार का स्ताप करके सापु (पूर्व)क्षा) क्र शस्त्रा के क्रार मी जाव । (न्य) वहीं (प्री) परि-मेत्रणमा य मे पामा, ते य उद्हमहैनसा। मुत्रीन मंत्रमंतियं, म छ्ते मा पमन्त्रत् ॥ ६ ॥ मुनाहामे सुन्दित्ता, नही सन्त्राहिमाम् । माहनेसे उन्तंते, मानुहमेहि तिनुहुने ॥ ८ ॥ क्षांकानी के (म्मून्क) हतात होने कर वक्ष्यं कारिक न करती हात्ती हात्रीक्षा का कुर्तवान में कुरे हा दा हि क्तात पुर क्षण साथि (उत्त्यो का साम का व्यान्त्यात से यशीस्त न होते।



स्र भार मापापी जाजी, शुमाल, मीज, सर्वजीर सिंद स्थाम जादि जाकी बन्नि उम मातु का मीस मञ्जेल करें जीर मन्द्रर प्यादि साका रक्त माम को नो साथ होण जादि के द्वारर उन ग्रामियों का पात च करें और जिस बक्त की में बार रहें ही उस जक्ष का रजों के तक स्वार बाहान हो नक्षेत्र माले मीप ब्लापि (०) नथा (व्हेंबरा) मीचे मानी जिल मेरष्टे गाले सर्मापि मानी है। यिपि मे ्रसाल्लास्ते ग्रीम और रज्ञका ग्रजात्र मात्रत् करेतो (तक्षेत्र सापुत्रस्य हो नतो मारे थीर (पासनक्ष्) न रजीवरण से प्रमाजित नष् रमामी से गुत्र होते पर 'स्टान्न्यः समें समयान नुनेद्ध बहुन हरे। तथा (बान्तेति) बनुत्व सराम्पी अनुहुन प्रतिहत नन्यत्र काथ मात्र मृत्ते की ब्रम्मा पर को बत्ता। ब्रही मृति कोई वृत्तीन्त द्रम्मां मृत्ता की तो वह दुसे समाभाग वृष्टि महत करे चीर ज्ञानगरी: - के को लंगमा) वीटी श्रमात ज्ञारि मंग्यंक पानी सूमि पर जनने पाने (पत्ना) पानी है (व) सीर (व) मारायः---वर वण्ण चण्णे शिक्तं अनुवार निरित्तं वर अनुवित आहार करणाम करते नवर नवस्त प्राणियी में चुम्रा सन्त्रापि --- (स्वापाने) स्वतः का त्याय कारे साम् (इंदीशका) कक प्रत्या के कार को जाय । (त्व्य) यहि (क्षि) परि-गिम्पता य त्रे पाता, त्रे य उद्गयद्वारा । मूर्ति मैम्मोनिमं, म स्ति व प्रमुजा ॥ ६ ॥ महाशाम वृष्टिकार, हो मृत्यर्थियावत्। माह्येचे उचनरे, मानुस्मेरि निगुद्धे ॥ = ॥ क्षमारी के मिन्टर दान होने पर मान् क्षेत्र म नामि मान्त्री मान्त्र कर इस्तेमन न क्षेत्र मा क्यान द्वा करण्य कार्त जियम्बन का ब्याम का म्यान्त्रात के व्याप्तित त होते।। क्षाण के द्वारा वयात्रव भी म करें ॥

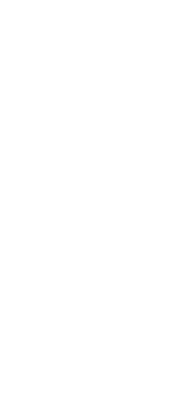






















गुद्धं म याउक्रामं म, नेउक्षामं म बाउकामं म । पण्नाहं बीमहरियाई, तसकायं म सव्यसी याच्ना ॥१२॥

बन्यपाथः - १२५ पृष्टीकाय (व्याउहाये) घण्काय (नेउकाये) तेउकाय (वाउहारं) यासुकाय (व्यागाइं) पनक (बीयरियाइं) नीत्र. हरित (०) थीर (उपका) प्रमकाय को (पत्रमो) मर्थ क्य से (मर्प्ता) आन कर (य) तथा (एगर) थे स्प (निर्मातार) सनिज एगाइ मंति पडिनेहे, चित्तमंगाइ मे क्रमिएणाय । परिवक्षिय विद्वरित्या, इय मैदाय से महावीरे ॥१३॥

मायाजः----मनगःन नहागोर स्वामी कृत्रीकाय, ऋषकाय, तेउकाय, वायुकाय, पनस्तिकाय और प्रमकाय इन छहाँ कार्यो गंत्र हैं (बन्ते) गमा निचार कर (ब) थीर (बोबव्याय) नमझ कर तथा (वे) इनकी हिंसा में पाप नगता है (बन-इइ) ऐसा (बंजाय) त्रात कर महालेरे। मारमान महार्नार स्वामी (बीखीउत्रत्) इनकी हिमा का स्वाम करते (विविष्या) निचरते थे ॥ १२-१३ ॥

का चनन जान का इनका नागरम नाथान किंमा न करने हुए विचरने थे।

यन्यपानीः --(बम्बः) क्षमं सं यानी क्षमें कै यमीभूत होकर (वावरा) स्थायर जीव (संगगए) त्रस क्रपं में वरिश्वर्त होते यद् यावम य तमनाष्, तमा य थावरनाष् । अद्वा सञ्ज्ञीषिया सत्ता, कम्मुणा कष्पिया पुत्री यालाः॥१४॥

मावाये: कर्मा के मशीमृत होकर प्रम जीय पुरुष्यीकायाषि स्मायर जीनियों में चीर स्वायर जीय प्रम योनियों में इंशम होते है. चगरा मधा गांत याने जीन रामहेत से युक्त होकर खपने किने हुए कमी के अनुसार मित्र भिन्न भिन्नों में उद्राप्त होते रहते हैं। ों (यहुस) समया (नम-ननब्रोम) त्रम प्राणी (नागनाए) स्वायर द्रव में परिणुत होते हैं (बहुस) स्रथवा (एनभोणिय) सर्थ योनि पाले (कान) यवानी (नाग) जीय-कमों के यज्ञीयून होकर (दुशे) मित्र नित्न योनियों में (किन्म) परिवर्तिन होते राहते हैं ॥ १४ ॥ 🐃



कार मार्ग मार्ग मान मान मान मानहेत म नक होहर चनने किने हुए हमी है अनुनार मित्र मित्र मीनमी में उत्तत्र होते रहते हैं। ताता - वारावीय स्वत्यां कृत्वीकाम् अत्वकाम्, महक्षाम्, यामुकाम्, यमव्यतिकाम् स्रोर ममकाम् इत द्यां कार्यो गागाये: कार्या कार्याम होकर प्रमात्राम कुम्मीकायाषि स्थावर चीनियों में चीर स्थापर जीव प्रम गीनियों में इसान होने यन्त्रपांगं: न्त्रे नृत्ताकाय (यानकानं) घटकाय (तेत्रकां) तेत्रकाय (बातकां। बायुकाय (बागाइ) पत्तक (बीगदिवाइ) n . भे (1001) गमा भार (व चीर व क्याम) ममम कर मधा (मे इनकी हिंसा मे पाप कपता है (रव-रह) ऐसा (फंगप) मन्त्राप्ताः - (मानाः) कां मा मानी कांगी के यन्त्रीमुन ब्रोक्त (पान्ता) स्थापर जीय (लंगता) बस क्य में परिणत ब्रोते हैं (कहर) चक्का (क्का-कार्यक) बन वाली (कारकाए) स्वायर द्वत में वहिलान होने हैं (बहुवा) स्रथया (क्वमीलेवा) सर्व योनि यासे रीत हरित (, सीर (ननर) असकाम को (ननो) सर्व क्य से (नर्वा) अस कर (व) तथा (एवर्) में सम (निमांगार) सिन्धि *** मधार्ष (तम्) तीय कारी के वशीयून होकर (त्री) निष्य निष्य मीनिर्गे में (क्षिया) वरिष्यतित होते रहते हैं ॥ १४ ॥ गर् शासम व तमनाव, तमा व धातरताव । सद्दा मध्यजीतिमा सुचा, ऋमुणा कृषिवा पुरी बाला ॥१४॥ एगाई गीन विद्यंत, वित्तमंत्राई मे अभिगमान । विषितित विहरित्या, इप मैलाप से महाबीरे ॥१३॥ गुर्त ग माउक्षां ग, नेउक्षां ग गडक्षां ग। पण्मां बीयहरिया , तसक्षां ग सन्वती गज्ना ॥१२॥ त्राम कर रम्परी समागम महारीर रतायी (मंत्र्रांत्र्य) इनकी हिंसा का श्वास कर है (स्तित्या) निचर्म थे।। १२-१३॥ का पान जान का हनका मातक मधान दिया न करने हुए विचाने थे।

É



युद्धं म खाउकायं य, तेउकायं य बाउकायं य। प्यागाइं बीयहरियाईं, तसकायं य सव्यसी याच्या ॥१२॥ एगाइं संति पडिलंहे, चित्तमंताडं मे अभिएणाय। परिवक्षिय विहरित्या, इय संवाय से महावीरे ॥१३॥

यन्यगाथः-- 'प्रतीत पृथ्यीकाय (याउकाये) प्रयक्ताय (तेउकाय (पाउकार्ये) यायुकाय (पाणाइ') पत्तक (बीयदियाइ')

मायायोः—भगयतन महायोर स्वामी कृष्योकाय, ऋषकाय, तेउकाय, षायुकाय, यतस्वतिकाय श्रीर ब्रमकाय इन छहाँ कार्यो ग्रज, एरिन (१) थीर (नमका) प्रमकाय को (मनमो) मर्घ क्य से (मरमा) जान कर (१) तथा (परार) ये सप (निममंतार) सन्पित ाता है (बन्धर) पेना नियार कर (व) थीर (बाबण्णान) ममझ कर तथा (वे) इनकी हिंसा से पाप लगता दें (दव-दह) ऐसा (संनाय) ज्ञान कर 'महामोरी समयास महाबीर स्थामी (वीस्विध्नम) इनकी हिंसा का स्थाप करते (मिरुलिया) निचरते थे ॥ १२-१३ ॥ को जेतन जान का इनका प्रायम्भ प्रथान हिंसा न करने हुए विचरते थे।

प्रन्याथी: —(कम्मा) कमं से याती को में के पत्तीभूत होकर (थावरा) स्थावर जीप (संगताए) जस क्रम में परिश्वत होते ग्रद् यावस य तमचाष, तमा य थावस्ताल । अदुवा सब्बजीषिया सत्ता, फम्मुणा कप्पिया पुढी बालाः ॥१४॥

ों (बर्ग) त्राग्या (नग-नगत्रोग) प्रम प्राणी (गागनाए) स्यायर रूप में परिशत होते छैं (घरुँपा) ऋषवा (एनग्जीशिया) सर्थ योनि यांते

(बाना) त्रवाती (बार) जीन-कर्मों के वशीसून होकर (बुब) भिन्न मीन योनिगों में (किया) परिवर्तित होते रहते हैं ॥ १४ ॥ '''

गायाये: कां कि वशोभूत होकर त्रम जीय वृष्यीकायादि त्यावर ्योनियों में थीर त्यावर जीव प्रस योनियों में कंतम छीते है। सागरा मधी गीन वाल जीव रानद्वेव से युक्त होकर खब्ते किये द्वुष कर्मों के अनुसार मित्र मित्र योनियों में जरुप्त्र होते रहते हैं।

3

गुद्धं म खाउक्रामं म, नेउकामं म बाउकामं म। पण्नाइं बीमहस्तिाई, तसकामं म सन्बत्ती ग्रष्टना ॥१२॥

एगाइ गित विडलेहे, चित्तमंगाइ ने क्रमिस्माय । परिवक्षिय विहरित्या, इय सैदाय से महावीरे ॥१३॥

धान, होरत (०) चीर (०१६१०) प्रवकाय को (गत्यो) नर्ग क्ष्य से (गत्या) जान कर (४) नथा (एतार) ये स्रय (निष्णंतार) सन्चि गंत्र हैं (बटरे) गमा निवार कर (ब ब्रीम विज्ञान) ममझ कर तथा (में) इनकी हिसा में पाप लगता है (बन-इइ) ऐसा (संगय) यन्याथः - १मी गृष्टीकाय (याउकायं) मण्काय (नेउकायं) तेउकाय (याउकायं) यासुकाय (पणगदं) पनक (बीयरियादं) त्रात कर गरालों) प्रमयात्र महार्थार स्पामी (बंध्तीक्य) इसकी हिंसा का त्यांम कदके (विविष्य) विचर्ते थे।। १२-१९॥

मायाजीः--- मनगःम महायोग स्वामी क्रुकीकाय, खर्षकाय, संउक्षाय, पायुकाय, पस्पतिकाय खीर प्रसकाय इस छहो कार्यो यद् यागम व तमनाष्, तमा व यागरनाष् । श्रद्भया सन्यजीविया सत्ता, कम्मुणा कष्पिया युत्ने वालाः॥१४॥ का अलल जान कर इनका प्यारम्भ प्रथीत दिसा न करने हुए पिष्परते थे।

यन्त्रयाथी: --(काना) क्रमं सं याती क्रमों के प्रतीभूत होकर (पाषरा) स्थावर जीप (संगगए) त्रस क्रम में परिण्य होते

ों (कासा) कामता (अता-अपना) त्रम प्राणी (बायनाए) स्वायर रूप में परिणत होते हैं (बरुपा) श्रथवा (पननोगिया) सर्व योनि वाले (काम) यवानी (वाम) जीय-कारी के यज्ञीमून होकर (वुंध) भिष्न भिष्न योनियों में (क्षिया) परिपत्तित होते रहते हैं ॥ १५ ॥ "

हैं चगरा सभी गीन पान जीय समदेत से मुक्त होवर खपने किये दूप कर्मी के अनुसार मित्र विभियों में उत्पन्न होते रहते हैं। गागाये: कार्य क कार्यमून होकर प्रम जीय मुख्यीकायाति स्मावर जीनमों में और स्थायर जीय प्रस मोनियों में इंत्रेष होते



बन्साथः -- ंपूरी, मृष्यीकाय (चारकार) मध्काय (विकाय) तेउकाय (वारकार) पायुकाय (व्यावाइ) पत्तक (बीयदरिवाइ) मुत्रमि म खाउकार्यं य, तेउका्यं य पाउकायं य । प्रणमाद् वापहास्पाद, तातकायं य सन्यसा पण्डम मारंजा एमाइं गीत पहिलेहे, निषमंगद्रं ने क्रिसमाय। परिवित्तप विद्धित्या, इस मेलाय से महायिरे ॥१३॥

मीज. एसिस (०) और (लाकार) असकाय को (संस्थी) सर्ग के (तारवा) जान कर (०) तथा (एसई) में सम् (क्तिनंताव) सिनित्त

मानाध्योः मममान महायोग मनामी प्रत्योकाय, ऋष्यकाय, मेनकाय, पायुकाय, यमपतिकाय श्रीर प्रमणाय दन हार्थ कार्यो नाक है (बिटोर) गम निवार कर (का चीर (बाबक्काव) समझ कर तथा (के) इनकी हिसा से पाप कामता छै (स्त-रह) ऐस्स (विधाप) यर् थायस म तमचाव, तमा न थातस्ताव । स्रदूता सञ्चतीमिया सघा, फम्मुना करिक्वा गुज्ञे पाला गारिक्षा। जान कर वाहाली) समयान महार्थीर स्वामी (बह्बिनजब) इनकी हिन्सा का स्वाम करके (विशिष्णा) निन्तरों थे ॥ १२-१६ ॥ को संस्ता जान का इनका व्यायस्त सामीन किया न काले हुए विषयों थे ।

यन्त्रसाथोः --- (वच्छन) कर्म मं वाती कर्मों के वजीभूत क्षेकर ' (वावरा) स्थायर जीव (inain) त्रज्ञ क्रव में वरिणाय क्षोते

ी (यक्षा) सथया (तमा-सम्बोत्म) त्राव प्राणी (पाषणाण) स्पायर स्य में परिमात कोने के (प्रकुम) स्थयम (एक्सोमिया) त्राचे योनि पाले

मामाथे। कार्म के मशोगुन क्षोकर ज्ञा तीय ग्रव्यीकात्रापि स्थावर जीसवी में श्लीर स्थायर जीव ज्ञम भीसिजी में इनमज कोते है । स्थायर सती गोसि माल जीम समग्रेय में युक्त होकर खपने किये दूप कभी के अग्रुतार भिन्न भिन्न भीतियों में उत्तन होते रहते हैं। (साला) मावासी (साला) जीय-कर्मी के स्थानियन होकर (पूरी) भित्र मित्र सीलियों में (कलिया) परिवृत्तिन कोते रोत्ते भें 11 १४ थे थे थे



💃 पार्वका केनुगा (त) उत्तका (काम्थ) मगवान् सेवन नहीं करते ये किन्तु (विन्तु) प्राप्तुक (शिम्ब्य) आहार का सेवन करते थे।। 💣 प्र० नवीन मायरचे असचाराएस, वासुनिद्धे तंसेतु अनदिरखे। मस्ति वि यो पमन्त्रिया, सो वि य भंड्यत सुधी नायं ॥२०॥ मायस्यः — सावात ने दापाकर्मणाहार छ। कभी सेवन नहीं किया या वर्तीकि छाघाकर्मयाहाराहिके सेदन सैब्राट प्रकार के कमी का कथ होना समयान ने देखाया। इसी तरह जिन जिन कारों से पाय होना समयान ने देखा धाउन सक्ष को छोड़ हुसरों से पात्र में भी (वे) वे (व मुक्तिण) मही चाने थे। वे (कोमण) व्यमान को (वीवीत्रवाण) स्थाम कर (व्यवत्यव्य) कदीनसाव भावायः — सम्बान् महाबीर स्वाती बहुमूल्य वजी की या दूतरे के बजी की पारण नहीं करते थे। तथा ये दूतरे के पात्र भन्यायः---अगधार (काण्याच्यः) जाद्वार पानी के (माच्यो),परीसाख को जातने थे। ये (सेत) रत्तों में (माजुन्दे) सासक नहीं होने थे तथा (प्ततिक्ते) 'चात्र पगुरू मिराय मोत्रज ही हैंगा' ऐसी प्रतिषा भी पे नहीं करते थे । नेत्र थी पूक्ति निका सने के जिए उन्होंने कमी (संदेश) माला का (टो लिक्स क्या अमाजन भी नहीं किया (शे औप (प्रछी) उन मुनि माग्यान्द ने (लार् यो सेपर प पपनयं, परपाए वि से य भुजित्या। परिपटिनयाणु श्रोमार्थ, गच्छह संखि श्रसरत्यपाप ॥१६॥ में भी भोड़न नहीं करते में। वे व्यपमान का रायाल न करके व्यभीन मुनि से बाहार के त्यान से जाते थे।। से (गंबरी) व्यादार के स्थान में (गन्तह) जाने थे।। १९,॥

सपने गेरीर में (ले कि कंदल) कभी लाज भी नहीं की ॥ २० ॥

Land Marian Marian

office of the state

1

विषयः—कामान् शिक्षा क्युकं कामस्य में हो उस देवनूष्य काम को त्यारा कर कपनी सुत्राची को फैक्षा कर पतने ये ८. - ते में पीहेट डोनर नुतायों को महुष्ति नहीं करने में तथा करमें कर क्षक्षत्व मी नहीं लेखे थे।

अन्यप्यं: (१९६९१) मांनगान (क्यों:एएए) निहान होंद्रम (१९६९७) माइन (भाषण) मगवान् महाग्रीर स्थामी ने (ष्ट्रको) यनेक प्रकार ने (एन, इसी (नरी) विधि का (मणुक्कती) ज्ञाचरण किया था इसिनिय काम मोणाधी बात्मामों को एष) इसी प्रकार मिवाधी:----मावास महाबीर स्वामी न वृश्कि बकार में ष्राचरण किवा वा इसलिव इसरे मीकार्यो पुरलों को भी इसी प्रकार

॥ इति नवम अध्ययन का प्रषम उद्याक समाष ॥

व्यापरता करना बाहद ऐसा आं सुध्विधियामी श्रवन शिब्द श्री अन्बूरवामी से कहुने हैं।।

(एवत-नायते) काचारण करना चाहित् । (मि मे.म) प्रशा में कदमा है ॥ ६३ ॥

एस विदेश अधुनक्ती, माहणेण महमवा । यहुत्ती अपहिएलेख, मगवना एवं रीयंति नि शेमि ॥ २३ ॥

नवम अध्ययन का द्वितीय उद्देशक

पहले अद्याक म भगवान को पर्ग का यसन किया मगा है, अय उस यसति का प्रसान किया जाता है जहाँ भगवान् ठहरते थे। निर्यामगाई मिन्डायो, ग्मह्याथो जास्रो धुद्दमासी । बाद्दम्स गद्दं सम्मासयाई जाई सेवित्या से महापीरे ॥१॥

प्रन्यपायै:---ातरण) समायाच् महावीर स्यामी की चर्या में (शाषा) जो (एएदाषा) कितनेक (बारणाइ) ब्रासन चौर मीबाथै:--ानमुखानं प्रवन गुरु शा मुनर्गास्यामी से बूद्धते हैं कि धै सनवत्! सनवान् सहाबीर स्वासी ने जैसी शाष्या ब्यीर (।ग.ताया) मान्यार्थ (मृ. त्या-गान्याया) करी नई हैं (जाड़) जिन्हें (है) उन (गतानीरे) मान्यान् महायीर स्वासी ने (हेमिल्सा) सेवन प्रन्यपार्थः मगगन मानवीर स्यामी (एगग) कभी (बापेतव) जिसके चारों तरफ दीवार यनी पूर्व हो ऐसे सूने घर में, (मक्ता) समा थार तमा) व्याज के स्थान में थीर (गोषमाला) दुकानों में (पाती) नियास करते थे (बहुता) बाधमा (पाया) कमी व्यावंगमाममाष्यासु, पिम्यमालासु एम्या वासो । खदुवा पिसंयद्वायोसु, पलालपुंजेसु एमया वासी ॥ २ ॥ किया था तार) उन (मयमाम्मार) शरुया थीर बामनों से निषय में (मारुप्त) आप मुक्त से कहिये ॥ १॥ भागनाति का मनन क्या या उन शहरा और त्यानन जादि के निषय में छुपा कर जाप सुक्त से पाहिये।

(गमन्द्रामेग) गड्डं चीर लुष्टार प्रादि हे कार्य करने के स्थान में और (पद्मालपुंत्रेषु) मंच के ऊपर रखे गुप छण्युख के नीचे (पातो)

नियाम क्रमन थी।

410

die et ्र मीवयि !-- भाषान गारिश खाडु के बात्मम में हो जम नेषूरव बद्ध को शाम कर बचनी मुकाबों हो देश का बजने में एन्दु रति म पंडित होश्य नुजायों वां महापन नहीं व्यत्ने में तथा कार्य का बन्धन का मी मही केंद्रे में ॥ (महत्या) मनिमान क्यांडक्क्का, निदान रहिम (माहक्षेत्र) माहन (भम्मता) भगवान् महाग्रीर हवानी मे (क्युंसे) अनेक प्रकार ता (एन हमी तावा) विश्व का (वायुत्रक्तो) आवरण किया था हमनिष्य काव मोकाची आमामी को (रब) हती प्रवार ०म विही श्रश्चन्तेतो, माहण्य महम्परा । बहुमी प्रपटिएलेख, मनवया एवं रीपंति मि बेमि ॥ २३ ॥ the state of the same (गर्गन-गणे) धाचरण करमा बाहित्। ((न ब.म) व्हा मै कहना है ध न्हे ॥

मीदाधः---अग्रयान महायान स्थामा ने पुर्वोक प्रकार में खाचरण किया था इसक्षिष दुसरे मोकार्यों पुरुषों को भी इसी प्रकार ॥ इति नवम अप्ययन का प्रथम उद्याक ममास ॥ व्याचरण कामा चगहव ऐमा था सुप्रमांखामी खपने शिष्ट की अम्बूत्वामी में षहते हैं।।

्रे स्थानिक ें भागायों.—नानान महानोर कामों क्या मून घर नमा, प्याफ्त और दूखान में नियाम करने थे जीर कभी वहुई चौर तृहार क काम करने क न्यान म थोर मझ के फ्यर रखे हुए हुणों क जीवे नियाम करने थे।। थन्त्राधः — नगवान महार्वार (प्यमः) कर्मा (प्रामतारे) मुखांपिरते हे रुपात में पत्ती धर्मछान्ना चाहि में, (प्रातः मागे) दर्शाचे म उन क्रुए महान में नद थे। और क्सी (उगरें ति) नगर में (वाती) नियास करने थे। (रगरा) कर्मा (उनारो) इमछान भीवार्थः — अम्मान कार्यार स्वासी व्ययसर के श्रनुसार कभी पर्मयाका में, कभी वागिषे में वर्त हुण मकान से, कभी नगर में, क्षन्यायं.—'गुणे) नयस्या में रत मुनि (क्रपे) प्रमण मायान् महापीर स्मामी ने (स्पेरी) स्न (फ्पेरी) स्यानी में (सोर किया था । वे (ए। १५० फि∽रा(१९० फा गत दिन (व्यवसक्षे) स्तवसक्षे ध्वयुष्ठाससे पानवान् रहते थे । वे (लम्पने) कसी समापृत्त ही स्तर्के-लक्षत्वरूप) उत्तरम् संद यये तदा कर्यान् नेत्द ययं से क्राधिक महीं किन्दुनेत्व यर्पे से कुछ कम सनय नक (पानि) निषाल यागंतां आतमाताम, नढ य खमं वि एगया बासी। सुमाखे सुएषमारी घा, रुमचमुखे वि एमपा घासी॥३॥ एएहि ग्रुको नयसेहि, मधये आमि रनेरमवासे । राहेदियंथि जनमाणे, भाषमणे समाहिष् भाइ ॥ ४ ॥ म (कृत्वामोरे, रीवार रहित मूने घर में (ब) घष्पचा बमी (स्म्बन्धे वि) मूझ के तीये भी (बाग्र) निवास करने थे 15 है ॥ सीदाधे:--- अमग्र सापान् महाशीर स्वामी तेरह घवं संबुद्ध कम समय नक इन पूर्वीक समा करते ये एवं (मारिए) क्विट चित्र वित्र होकर (मार) प्रमेष्णान गुरू लप्यान प्याने ये ॥ ४॥ कमी हसशान म. कथा मून घर ने चौर कमा वृक्ष के नीचे नियान करने थे।।

cities out of a city of the state of the sta

20 ac , दिस्य ही याता तो मामान् वसकी निशुनि में लिप सीतकाल की रात में मपने खान से माहर ्राची अन्यवायी--- भगवान (वालेंगे) तिन स्वानों में उद्दरते थे (वाले वर्ष (वालेंगरा) प्रतेश्व मकार से (शीम) भर्षकर (स्वाना) बरसर्ग (कास) दूप थे (द) और (३) जी (संकणण काळ) सरक बर चलने माले माणी है उन तर्थ, नकुल भादि मानियों द्वारा (पद्र) तथा (थे) ओ (नीक्ष्ण) पक्षी (रन्पति) सनीय षाकर मीतमक्षय करते थे उन गीय प्रादि मानिपों द्वारा पहुत से उपसाँग हुद । मानायी — जागे मगनान टारते थे वर्षो सीत, क्रम्ण, चतुमूल बीर प्रतिकूत बनेत प्रकार के मगदूर वनमाँ पूर। सूते पर मे टहत्ने पर सर्ग और नद्दश्र खादि द्वारा ठथा रमशान में गीय श्रीर श्याज थापि मोसमधी ग्रायियों द्वारा व्यतेक अयद्वर ज्यसमें हुय । शनयार्थः—मगवात् धो क्रम (क्रम) योर सीर पारकृतिक काति (था) सीर कमी (विकत्त्व) शक्ति भीर माता काति क्रज हाय रखने वाले (जातका) प्रामस्क्रह पुरुष (जनसीत) उगसमें करते थे (ब) श्रीस (एसश) फर्मी (मीमर) माम में (१९८) रुदी शिष्टें-∽पूने यर में टहरने पर भीर श्रीर सारहारिक भाषि द्वारा उपनाँ थिये जाते में भीर बाजार में कुछान भाषि यर ्षुपसन्मा, मीमा मासी मधोगह्मा य। तंतव्यमा थ ले पाषा, घदुषा ले पष्तिराषो उत्तर्पति ॥७॥ थहु कुचरा उवचरीत, गामरक्खा य सर्वहत्या य । थद्र गामिया उवसम्मा, इत्यी एगरूपा धुरिसो य ॥त। " या (प्रीसे) तुरव द्वारा (उनसमा) अवस्तर्ग दिये जाहे थे ॥ द ॥ कर प्यान में स्थित हो जाते थे।

Company of the compan

💪 ं रें..., प्राचरा वि प्राया राष्ट्री। ब्राज्याहिए कताहत्या, पेहमाचे समाहि श्रपडिएसे ॥११॥

थानवपथं:─(एसर) क्रमी क्रमी (तथ) बहां वर (पक्ष) राति के समय (एपरा) रातेक ब्रामी को प्रकेष हानी पाने परकी समय हासि (क्रमेरि पुरम (क) मगयान महातीर स्थामी से (धिमेरी) मुझे ये मीर (क्लारिए) मगयात्र के क्रुठ न योको पर (क्लारक्ष) के मीधित होने थे परम्तु भगयान् (मगाँ३) समाधि में (पेदगरी) तस्तीन रहते हुए (याधिरोरी) प्रपते चापमान का यन्ता क्षेते की

रच्छा नहीं करने थे ॥ ११ ॥

सीनाफी—नगरात सहादोर स्टाचीर करानी एक एक कारिक हादे गारह एपं टक फड़ेले पिपदे हैं। एस साम अब में सुने पर सामि है ?!! किन्तु सापान कुछ भी जबर बड़ी देने थे। तथ में जहारों जोते हो है। "में भीन हैं ? एकी था है ? पही को दहरा हुमा सममापसुंक करने में किन्दु बहना होने की कमी इन्द्रा नहीं करने हैं।

मिनु (सीत ति) है एस मजार (शादह) कह कर मानवान (हीराजेश) जुए ही जाते थे। (कारहा) गरी में मोशित होते. तो (कर) हरत परीपह को सममाग्यांक सहन करना (जाते) उसम (मने) वर्ष है ऐसा जानकर (में) वे मानवान चुरायांप रहकर (जार) सुन -धपमंतरीत को हत्य, शहसीतिष भिक्त् शाहडु । अयद्यत्तमे से धम्मे, तुतियीद कताहत् सह ॥१२॥ ·· थान्यार्थः --(त्य) यहां (बलाति) हत महान के अन्दर (वर्ग) यह (ये) कीन देरी ऐता यूफ्ने पर (वर्ष) में (निश्म)

प्यान में संकान रहने थे॥ १२॥



्र प्रत्ने दरों ये (कारिक्त) वे वह हच्या भी न करते थे दि 'सुके पदम रहित क्यान सिक्षेत । जिस क्यान में मगयान वहरते थे वह मारा (क्षः, नींचे (क्षर्क क्त्या भोगन यांना होता था। (क्षा) क्रमी क्रमी (रामे) शरीम के समय (क्षार्म) मगयान् (क्षित्रम) धी वापना करने थीर परतारित ग्यात का व्यापय कीन तथा फिननेक तो लक्दी वजा कर शीत की निशुनि करने हैं । घीतरपर की पीइ पर्मः ट सड रोती हें डर्नालन वे लोग छेना करने हैं किन उन सिरिश्यनु में मनवाय ग्रहनीर स्थापी प्रामाषपूर्व के शीनरपर की सहन मांतायो---कामन ग्रहारीर स्वामी ने पूरीक ककार से चावरणु किया था। इसमिए दूसरे मीकार्षी पुरुषों हो भी ब्ताबन बनुकरण करना पाहिए देवा की गुप्तमांत्रमामें चनने रिगय जन्मू स्वामी ने बहुते हैं। याने ठढें हुए स्थात से पाहर जिसल कर (अंग्रेश) ग्रानितपुर्क शीत को सब्त करते हुप (उप्प) स्थित रहने थे ॥१शासि॥१॥ मात्रायः ---(तातर यनु मे साथारण ब्यक्ति सीत से कावने लगने खौर अन्यतीरिक सामु सीतिनेशारण के लिए फनक चाहि काने थे। ये यह इच्छा भी नहीं कात अं कि मुक्ते वयनरहिन स्थात मिले। कमी कमी रात्रि के समय भगवात कपने टहरे हुए स्थान से थन्याथः—(समय) मतिमान् (क्रांडक्केण) निदान रहित (मध्येक) माहन (ममय) मगयान् महामीर स्वामी ने (बुक्रे) पहुत गर (स) इस (बिहो) तिथि का (ब्युक्टते) जावरत किया था। इसितिय काम मोद्यापी बाहमाथी को मी (स) इसी मकार एस विही अधुक्रतेत, माहवेष महमया । बहुती यविहत्तवे, मनवया एवं रीवंति ॥ १६ ॥ क्षि भेति ॥ बाहर निक्लकर शीनस्वशं को सममावपूर्वक सहस करते हुए प्यानस्थ छड़े रहते थे। (सैंगति-स्विते) काचरण करना वाहित् (ति वेति) ऐसा मैं कहता हैं।। १६ ।।

॥ इति नवम अध्ययन का डितीय उद्यक समाप्त ॥





,,









्रियाम को हिलाई होने बचने किसी भी महार ही माया वर्ष बातराय बहुजाने जिया भाजपान बही भी भीरे भीरे वर्ष आते थे हि होने भीर जमाजियों कर करने तम से बोजी भी महाने हैं। कुछ जादिना कियों हां हिसा महाने हुए भाजपान मिण्यात करने थे। मावायः — भाषात्र टाटडुक, गोदोहिका, भीरानन कादि कालतों से बैठ कर पार्गयान, ग्रुवसमात्र किया करते थे भीर वे मायारी—करवा, सूखा, टरवा उददी का काथमा पुराने तथा तीरमा थान्य पता बता हुआ। जैसाभी षादार मायाच को मिन , जाता, ये उसी में सन्तीय करते थे। बाहार के मिनले पर या ना मिनले पर भाषान् राष्ट्रा राहत प्रहे थे।। निर्विकार माय से एकत) पर्तरवात गुरुसण्यान (कार) प्याने थे (व) श्वीर (गनारे) माने कानाकरण की शक्ति को (क्ताने) देखते मन्दार्थः—(एस) भीता द्वमा (त) मयया (ग्रुष्ठ) मृत्या हुमा, (सेटीहे) ठएडा घाषार (ग) मयया (प्राप्तु-भग) यद्वन दिन का उड़दूका आहार (तुम्ख) पुराने घान का व्याहार (बड्ड) घायवा (बुलाने) भी व्यादि नीरत घानव के घने बुध (ा.के) घाहार मन्याये.—(७) वे (मार्थः) मगयान् महावीर स्थानी (काण्यते) बरकद्वक, पीरासन णादि षासनौ से वैठ कर (बरुष्टुए) ्रष्ट (म्लीमणे) निरीद साय से (बर्ट्स) उत्तरं लोक (मर्ड) व्ययोजीक (त) मीर (जिस्) तिर्वे क् लोक (लोश इन नीनो लोको से स्यक्त बिन मार् से महाशंते, जासप्तरंथ षड्रम्डूप मार्ख । उद्दे जदं य निरियं य लोप, मायर पेहमाणे समाहिमपतित्त्वो ।१४। मिष ग्रहर्षे वा गुक्ते वा, सीवपिट पुरावकृत्वातं। यदु युक्तमं वा, लद्धे पिडे व्यनद्धे दविए ॥ १३ ॥ के (नदें) मिक्षमे पर (क) भववत (चनदें) म मिलमे पर (र्वक्) मगवात् शुस्त रहते थे ॥ १६ ॥ का (मावर) ध्यान में विचार करते थे।। १४॥



विक मची . मादार्थः—काषान महानीर श्वामी ने वृशेष्ट प्रकार में चापरण किया या। हमनिष्य दूतरे मीथाभी पुरुषों को भी इसी प्रकार जापाण काम पाहर। ऐका भी सुभागमाम बचने शिष्य अन्युनामी सं बहते हैं।। अन्वपर्यिः—(महत्त्वा) महिमात्र (क्वांत्वेच्च) निष्मत रहित (वादवेच) माहन (भाषत) मगयात्र महायीर स्थामी ने (द्युत) वहुन वार (छ) एस (विहा विधि का (वजुरुकी) बाचरण किया था। एन बिष काय मोद्यार्थी मात्माओं को मी (एर) हसी पकार एस विही मधुक्कती, माहखेख महमया । बहुमी मपहिराधेख, मगराया एवं रीयंति मि पेमि ॥१०॥ ॥ इति श्री आचाराङ्ग मृत्र का ब्रह्मचर्य नामक प्रयम् श्रुतस्क्रन्य ममाप्त ॥ (ग्रेगति) काचरण करता व्यक्तिय (१० वेति, ऐसा में कष्टता है।। १७॥

The state of the s

(लोहं करेंद्र) चयाचापां (जो बद्धे बच्चे बच्चे (क्चे) (जूरी (ब्यूरी) (ब्यूरी (ब्यूरी) (ब्यूरी (ब्यूरी) (ब्यूरी (ब्यूरी) हिंदी विश्वेता हुं उद्देश हुं प्रवास स्वास स्वास ((स बेसी) निरस स्वास स्वास



ता स्वास्त्र का स्वास का स्वा





